वार्षिक अंक
१५ अगस्त ८९

भोजपुरी डाइजेस्ट

पुरुवैया

सम्पादक
पाण्डेय आशुतोष

'पुरवैया' के प्रकाशन पर

पडरौना के हजारो हजार

गन्ना किसानन के
उन्नति आ खुशहाली
खातिन हमार हार्दिक
शुभकामना स्वीकार करीं

आर० के० पाण्डेय
प्रधान व्यवस्थापक

कानपुर सुगर वर्क्स, पडरौना
कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)

प्रिय भ्रम को सस्नेह - आशुतोष

संस्थापक

गणेश चौबे जी
डा. कृष्ण देव उपाध्याय
डा. परमेश्वरी लाल गुप्त
डा. विद्या निवास मिश्र

संरक्षक

श्री सतीश त्रिपाठी (भा. प्र. से.)
श्री मसूद हसन (ए.डी.एम.)
श्री डा. अरूणेश नीरन
श्री एस. एन. पोद्दार
श्री आर. के. पाण्डेय
श्री बाबू लाल विजय
श्री बंका जी

संयोजक

बी एम. दास अग्रवाल
दिनेश 'भ्रमर'
डा. सुभाष मिश्रा
डा. प्रतिभा मिश्रा
डा. खुर्शीद अनवर
पीयूष पाण्डेय
ऋत्विक कुमार पांडेय

सम्पादक

पाण्डेय आशुतोष

सह सम्पादक

सुमित अग्रवाल
सुशील कुमार वर्मा

व्यवस्थापिका

सुश्री प्रज्ञा पारमिता

स्वामित्व

श्रीमती सन्ध्या सुरेन्द्र

पत्राचार

सम्पादक - पुरूवैया
पो. मलकौली, मंदिर- ८४५१०५
बगहा-२, प. चम्पारण
कोड न.-०६२५१ फोनः- २६५६७

लेजर कम्पोज़िग एवं डिजाइनिंग

कृष्णा टेक्निकल एण्ड एजुकेशनल इन्स्टीच्यूट
अलहदादपुर (रायगंज रोड) गोरखपुर

सम्पादकीय

२२.६.९५

जियले खातिन कुछ अच्छा कइल केतना कठिन बा, एह बात के सुनत त रहनी लेकिन कपारे ना परल रहे। 'पुरवैया' के ई दुसरका अंक निकालल 'प्रवेसांक' से पहाड़ हो गइल एह साल हमरा खातिन।

घर-गिरहस्ती के पचड़ा आ ऊपर से बेमारी। दू साल से त हम अपने विपत से लड़ते रहनी, एह साल एके साथे सब परल, खैर।

सब से लमहर समस्या बा अपने मन मोताबिक रचना पावल। पचासों पाती लिखनी बाकिर भोजपुरिया कवि आ लेखक तनिको ना सुगबुगाइल लोग।

हम पहिले ई विचार कर के 'पुरूवैया' निकलनी कि साल में तीन ठो अंक निकली, लेकिन रचना के टान पड़ गइल। सोचल बात मने में रहल।

अइसनों भइल कि रचनाकार लोग एने हमरो के भेज देहल ओने दोसरो पत्रिका में उहे लेख-कविता भेज देहल। जब 'पाती' में आ 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' में उहे रचना देखनी तब कम्पोज कइल रचना के छोड़ देवे के परल। कम्प्यूटर वाला के रूपया डांड़ परल। आखिर अइसन काहे होता?

जेकरा 'पुरूवैया' नीक लागल ओकर आभारी बानी आ जे 'पुरूवैया' नापसन्न कइल ओकरो आभार मानत बानी।

जे हीन भावना से रोगियाह बा ओकरा त बोखार लगबे करी। कुछ लोग हित बनि के अनभल करे ला, कुछ लोग बैरी बन के। अब त केहू खुलि के केहू के नीमन काम के प्रसंसा भी ना करत बा।

अपने सुधी पाठक बानी, एसे हमार निहोरा बा कि आपन विचार एह अंक के पढ़ले पर भेजब। जरूर भेजब।

जवन हमार सोच बा 'पुरूवैया' खातिन, अगर ऊ पूरा ना हम क पवनी त छिमा करब।

नागार्जुन जी अइसने घड़ी खातिन लिखले बांड़े-

"ज़ो हो न सके है पूर्ण काम, उनको प्रणाम!"

सम्पादक

उछाह

(एक अवधीं कलम से)

• (डा.) माता प्रसाद त्रिपाठी

मलकौली चम्पारन से बहति-बहति 'पुयवइया' दुनियां भर के भोजपुरियन कै सौगात बनि जाई- एक अवधी मनई के दिल कै बाति। हां, एसे खाली भोजपुरियै कै जिउ जुड़ाई- ई बाति हम कइसे मानि लेई? हम्मैं पुरवइया कै एक्कै लहर मिली तौ हमका लागत बाय कि जइसे हमारि 'थाती' मिलि गै। एका देखि कै, पढ़ि कै कुछ वोइसै लागत बा जइसै अपने करेजा कै टुकड़ा अलगियाइ कै फिर मिलि जाय, एसे जउन खुशी हिरदय मा समाइ जाथै अउर कुछ वोइसै खुसी होथै जइसै अपने गांव-जवार घर-अंगना कै बिछुरा कौनो मनई एक जुग बादि अचनकै मिलि जाय। राम जानैं आजु, हमका आजु से दस बरिस पहिले कै एक अपनै बाति यादि आवति बा-अपनै अपन कइकै हम अपुनै कै नाहीं बूझि पाइति! आखिर इहै तौ आपन अमरख होय जउने कै घाव पुरवइया के पीर संगे जुड़िकै औ भोजपुरी भइयन के आखर-आखर मा समाइके एक दुइ नाहीं, ना जानी केतने रंग मा लहकति बाय! पुरवइया के हरियरी आजु सालि भर बादौ झमकति बा। सरे सावन भरे भादौं बहति बा पुरवइया-सर-सर-सर-सर अपने गंउवन के चारिउ ओर। इन्दर महराज आजु यतना खुश बाटे कि हियां न जानी केतना कगार टूटि के गांव कै गांव बहावत चलि जाति बाय-डूबि जाति बा वोहि गंवार कै मन, बिललात बा ओकर मन-दरपन!

वोइसने मनई के बहाने एका 'पढ़ै' वालन के खातिर दुइ बाति (जउन यादि आवति बा) जरूर करब। हरी भइया (श्री हरि राम द्विवेदी) के जुबानी भोजपुरी रानी यसोधरा कै पीर आजु तक गूंजति बा-

जनि कइसन सुगंना कै बोलिया लगै
बैरिनि सौतिनियां हमके कोयलिया लगै
कुंहुकै रतिया करेजवा में गोलिया लगै
सहीं कबले इ अगम कलेस हो
गइला कउने करनवां बिदेस हो।
झूठ जिनगी के सोचल सपनवा भइल
रहिया तकि तकि के जोगिया नयनवा भइल
तोहरे सुधिया में पिरकी परनवा भइल
काहें देहला न एकौ सनेस हो
गइला कौने करनवा बिदेस हो!

हरी भाई तौ हरी भाई, भाई सत्तन (श्री सत्य नारायण मिश्र) कै एक बहुत पुरान गउनई हम गंवारन के दिल के तार-तार कइ देथै बाकिर ऊ गावथै आपन धुनि में- **मंड़इया मा मोर मन भीजि जाला।**

आखिर मा एक बाति भोजपुरी-अवधी कै झंडा देखावै वालन के खातिर एक सरनामी सुकवि के बानी में:-

सब्द है
सब्द खालि
बकि
भसवा कहां है भसवा।
सबके सब पत्ता है
पेंड़ कहिं ना।

(जीत नाराइन के सरनामी कविताएं, हालैण्ड १९८८)

अब हम एसे जादा का कहीं? हां, अपनि माटी औ आपनि माई के दूध मा सनी सनसनाति पुरवइया कै पीर आखिर के जानी??

सचिव : लोकायन ०५५१-३४३७१२
१५, सिविल लाइंस (यॉक्वी भवन)
वि.वि. परिसर, गोरखपुर उ.प्र.

कवि, ऋषि, देव आदि हों-
पीछे, मानव पहले !
ऐसे रहो कि धरती बोझ
तुम्हारा सह ले !!

- त्रिलोचन शास्त्री

स्मृति शेषः चनद्रशेखर धर मिश्र

(डा.) विद्या निवास मिश्र

पुण्यश्लोक पंडित चन्द्रशेखर धर मिश्र बिहारे के नाई, सगरो देश के विभूति रहलें। कम्मे उमिरि में उन के मान जान महामना मालवीय जी कइनी। राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू जइसन साधु पुरूष आ देश के प्रसिद्ध आयुर्वेद विद्या के पुनः प्रवर्तक गणनाथ सेन से उहां के बहुत प्रेम भाव रहे। उनके गूलर पर शोध–प्रचार देश–विदेश–सब जगही रहल। हमन के लरिकाई में गूलर के बारे में उन कर कई पुस्तक पढ़े के मिलल रहल। इहे नाहीं, उन कर जब जब गोरखपुर आगमन होय, त हमरे घरे उन कर आइल निसचिते रहे। आ सजी लड़िकन के बोला के गूलर के गुण पर भासन देहल ओतने जरूरी कार्यक्रम रहे। लइकाई में ओ सब सनकाहे बात लागे।

उहां के बारे में ढ़ेला मामा सब बतलावें जे उनके इहां मनेजरी करत रहलन। नाम त उन के श्री कान्त कृष्ण त्रिपाठी रहे, जाने कइसे 'ढ़ेला मामा' पड़ि गइल। उन से मिसिर जी के चर्चा कई बेर सुने के मिलल। उहे बतवले कि मिसिर जी गूलर के प्रचार के पाछे आपन सरबस न्योछावर करत बाटीं। मिसिर जी जब जब गोरखपुर आवें तब तब गूलर के कई ठो दवाई बना के ले आवें। इयाद बा कि चोट–मोच पर गूलर बड़ा काम दे। गूलर त गूलरें नूं, लरिकन के बहुत अच्छा ना लागे। एक दू ठो खा ली सभे। आ ई दूसर बात ह कि कांच गूलर के तरकारी खाय, पकले पर मुरब्बा आ गूलर सुखा के मिसिरी मिला के मिठाई बने। ई सब हमेसा लाग ले रहे।

उनके चिट्ठी–पतरी के हिसाब विचित्रे रहे। जब पाती उहां के भेजीं त मन में रहे कि चिठिया जल्दी से जल्दी पहुंच जाय। एकरे खारित रतनमाला से बगहा टीसन ले एगो आदमी तांगा से आवे आ रेल से बेतिया जा के चिट्ठी डाले। एक एक चिट्ठी पर डाक टिकस से सौ गुना खर्च हो जाय। आजकल के फैक्स मसीन रहत त मिसिर जी ओकर जान निकाल लेतें।

एगो दोसर बात मन परेला कि ऊ कान से ऊंच सुनें। एसे उनके सुविधा रहे कि दोसरा के बात नाहीं सुने, बस अपने जोतले रहे। एक ठो अउर विसेसता रहे कि ऊ भोजपुरी कबो ना बोलें। नोकर से भी ऊ हिन्दी में बोलें, खडिये बोली में बोलें।

आ कबो कबो पढ़ल लिखल आदमी से बात करें त छंदे में बात करें। चिट्ठिओ–चौपाती में संस्कृत आ हिन्दी में छन्द लिखें। ई बात रहे कि, एह बीसवीं सताब्दी के हिन्दी लेखकन में आपन स्थान बनवले रहलें। हम के एम.ए. पास कइला के बहुत बाद में पता चलल कि ऊ भारतेन्दु युग के विभूति रहलें। खड़ी बोली में उनकर कविता–जहां तक कि हमके मालूम बा सबसे अगुवाह मुक्कमिल रचना हवे। उनकर कविता के कुछ नमूना जब पढ़े के मिलल तब बड़ा ताज्जुब भइल कि कतहियों से भासा के सिथिलता, छन्द के सिथिलता चाहे भाव के सिथिलता ना रहे। पता ना काहे ऊ बाद में साहित्य रचना से ओतना बिलगा गइलें। हम के ईहो इयाद बा कि उनके जीवन के अंतिम दिन कासी में बड़ा कष्ट से बीतल। कहां त उनकर एतना ठाट बाट रहे कि लाखन के संपत्ति खड़ा कइलें, आ ओके हाथ खोल के खर्च लें आ कहां अंतिम अवस्था

में एतना मोहताज हो गइलें? ई हम देखनी कि अपने खातिर ऊ कबो पइसा के जरूरत ना समझें, ना जमा करें। उनकर फकीरी ठाट रहले से असमंजस ना रहे लेकिन दूसरे के देबे खातिर उनका कचोटे कि हाथ में कुछ ना रहे।

अपने धुन के पाछे रूपया–पइसा, विद्या, वैदक के एतना बड़ा भैषजशाला – सबके दांव पर लगा देहलें कि गूलर के द्वारा लोक–कल्याण होय। गूलर के प्रचार भइल चाहे ना भइल, ओकर छाप पडल होय चाहे ना पडल होय मगर ई छाप जरूर पडल बा कि अगर ओइसन धुन क आदमी व्योहारिक रहतें त बहुत बड़हन आविष्कर्ता कहल जातें।

मिसिर जी एक दम निराले रहले—हर क्षेत्र मे, हर प्रकार से । उन के केहू पहिचानल नाहीं। अगर पहिचानले होत त बात कुछ अउरी होत।

एम.३, बादशाह बाग वाराणसी

गज़ल

-पाण्डेय आतुतोष

घर छवावे के उजरनी तले पानी बरसल!
हायरे, माघ में मेघवा भादो खानी बरसल!!

◆

हमरे अंगुरी में लगल दाग करिख्बा के अमिट
ओने नेता जी के छत फाडि के चानी बरसल!!

◆

हम त दुअरा पै लगावत रहीं नकफेनी के
तले पुरूवा पै चढ़लि रात के रानी बरसल!!

◆

सूख जाइत कथा-मानस के सब अमरित, तबले-
प्रेमचन्द अउर गुलेरी के कहानी बरसल!!

◆

बह गइल टूट के बान्ह, अउर किनारे के गांव
सगरो अधिकारी के बींबीन पै जवानी बरसल।।

मलकौली मंदिर

बगहा–२, प. चम्पारण ८४५१०५

टिभोली

खा कउआ मामा...

—रामनवल मिश्र

टका सेर भाजी, टका सेर खाजा,
धमधूसर राजा, अन्हेर पुर नगरी,
खा कउआ मामा, गदाइ गइलि जोन्हरी!
मांसू के मोटरी पै, गीध रखवार बा,
चामे के बेरहा, कुकुर पहरादार बा,
नाथ नाहीं पगहा, खाला खेत गदहा,
बकुलन के सउपल ह ताले के मछरी!!
सूर बांटे सिरनी, मिली जुलि के खत बा,
लोढ़ा अस मुसवा मोटा के भइल जात बा,
टूटि गइल सिकहर बिलारी के भागी,
घीवे में पांचो बुडल बाटे अंगुरी!!
अरहर के टाटी ह, गुजराती ताला,
सुअरी के सुनुर, गिरगिट के माला,
तेलवा चमेली के, माथे छछुनरी के,
गलवा पे पाउठर घसति हवे बनरी!!
देत बा अहिंसा के, उपेदेस चीता,
मुडिकटवे बांचे, रमायन आ गीता,
देख कुलबोरनी बनेले पुरुवन्ता,
सीता कहाली जनमवा के उढ़री!!

-ग्राम-डुमरी
पो. विसुनपुर, गोरखपुर

तनी हंस लीं

साधू बाबा पछतावा के महिमा पर परबचन करत रहलें। आखिर में जोरदार बोली में कहलन– 'त भाई आ बहिन लोग, परमात्मा हमनी के पाप के छिमा कर दें एकरा खातिन पहिले हमनी के का करे के चाहीं?' तले एगो लडिका चिल्ला के कहलस– स्वामी जी, पाप!

एगो नेता बीमा करे आइल एजेन्ट से पुछलें–'इ. बता व कि अगर आजु हम अपनी बीबी के नाम पचास लाख के बीमा करा दीं, आ ऊ काल्ह मर जाय त हमरा का मिली?'
एजेन्ट आपन बेग उठावत बोलल–'फांसी।'

ललित निबंध

हम चम्पारन बानी!

(डा.) रविकेश मिश्र

हम चम्पारन बलुक चौपारन हई। अपने कथा के ओर कहां से पकड़ीं,ई बुझाते नइखें। इतिहास के कुफुत ई बा कि ओनइस सै सतरह में निलहन के जोर जुलुम से उधियार खातिर सतवरिया के सुकुल जी (पं. राजकुमार शुकुल) महात्मा गान्हीं के ईहां ले अइनी। अहिंसात्मक आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आ सत्याग्रह के हम पहिला प्रयोगशाला बननी। तबसे हमार मन जवन गान्ही बाबा के साथे उमगल त ओनइस, सै ओनइस, तीस, बेआलिस, सुराज के आधी रात आ ओकरे बादो तीस चालीस बरिस ले– जे नीक– बाउर ऊंहां के नाव ले के आवे, हम झंडा उठालीं आ सीधे दिल्ली भा पटना राजधानी भेजल कइनी। महतमा जी के परेम आ कस्तूरबा के 'विदराबन आश्रम' के दुलार से हमार मन अइसन अघाइल, जे भला तबले ना चेतनी, जबले हमरे इंच इंच जमीन पर हतेया, डकइती आ फिरौती के कब्जा दाखिल ना हो गइल। बाकिर चेतबो कइनी त का कइनी, जमाना बदल गइल रहे,– कुंआ से बचे में खाई में भहरा गइनी। सुराज के पहिले त कुछ उद्योगों धंधा लगली सों 'निलहन' के बाद 'मिलहन' के पौरा आइल, बाकिर सुराज के बाद त भगवाने मालिक बाने। अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी के नयका जंगल हो गइनी हम। एहसाइत, हमके दुनियां चौपारन के नाव से कम 'मिनी चम्बल' के नाव से बेसी जानेला। सांझे चचरा बन्न हो जाला आ पहाड़ अइसन रात राम राम कहके कटेले। हमरे गांव के छवरिया सब, जवनन के देहीं पर मुट्ठी भर मांस ना रहे– गिरोह बना लेले सों आ लाख दू लाख के इनाम धरा गइल– जिन्दा भा मुरदा पकड़े खातिर। लीं, देखी 'भितिहरवा आसरम के दुर्दशा! भितिहरवा आसरम वर्हम बाबा के डीह बन गइल। हारल– थकल राजनेता लोग साल दू साल पर मनौती माने आ कराही चढ़ावे आवेला। गांधी विश्वविद्यालय के सपना देखते मुंशी सिंह कौलेज के प्रोफेसर साहेब झुकि गइनी। सिद्धू– कान्हू, विरसा, जयप्रकाश के नाम पर विश्वविद्यालय बन गइल, बाकिर हमरे अंगना में विद्या के दीया ना बराइल। किरतन गावे के होखे त परजापति मिसिर, ध्रुव नारायन त्रिपाठी, कमलनाथ तिवारी, विभूति मिसिर, विपिन बिहारी वर्मा (राजिन्नर बाबू क दमाद), केदार पांडे के नाव लेके झाल करताल उठल बाकिर काम के बारे में इहे जानलीं कि ना नौ मन तेल भइल, ना राधा नचली। ई लोग हमरे सपूत रहल, जिनगी भर हमरे सेवा के मेवा पावल बाकिर जैसे गउरा कुंआर, तइसे भतरइतिन! ओनइस सै पचीस के टूटल बगहा छितौनी पुल ओनइस सै छानबे में बनल। पूरा सत्तर बरस हमरे घर के पइसारे बन्न रहल। एगो चाउर टो लीं, हंडा के भात बुझा जाई।

बाकिर बिलमी, हमार इतिहास का ओनइस सै सतरहे से शुरू भइल? ओकरे पहिले का खाली जंगल रहल। जंगलो रहल त ओकर भी त इतिहास होला। आ जंगले कइसे रहल– तिरहुत राजा जनक, जागवलक्य, वाल्मिकी ऊ लोग कहां के रहले? बैराटी राजा बिराट के राजधानी कहाला, कीचक के बध भीम इहे कइले,

जीतपुर के पोखरा, आल्हा– ऊदल के अखाड़ा भी इहे बा! राजगीर वैशाली से श्रावस्ती के आवाजाही में भगवान बुद्ध हमके हर साल कांडे। अनेरे ना नू लौरिया में स्तूपो बनल बा आ अशोक के लाटो गड़ल बा जेपर ऊँहा के उपदेश गोदल बा। चानकी गढ़, सहोदरा बलुक यशोधरा कौना जुग के कथा कहेला? विष्णु गुप्त के कथा के हाथी हमरही जंगल के रहे। बेतिया राज, रामनगर राज, डी. के. सिकारपुर, बेलासपुर के राय लोग, डुमरिया के शाही जी, रतनमाला के मिसिरबाबा, देवराज के शेख, बकुलहर के महंथ जी– ए लोग के छोड़ के हमार इतिहास कइसे लिखाई? खाली राजशाही आ जमिदरिए ना रहल, तपेस्या रहल, विद्या रहल, बैदकी रहल, ध्रुपद धम्मार रहल, सरभंग सम्प्रदाय रहल, संतन के साधाना रहल, फकीरन के दुआ रहल, चंडी माई के थान रहल, तंत्र मंत्र रहल, रहसू गुरू के पुजेर भवानी रहली, रामनगर के शिवाला रहल, विश्वम्भर नाथ के तिल शालीग्राम रहल, शिव आराधना के तांत्रिक विधि विधान रहल, खड़ी बोली आन्दोलन के भभकत मशाल रहल, 'चम्पारन चन्द्रिका' जइसन पत्रिका रहल– ई सब भी त दोसरा जगह से ओनइस ना रहल, तब कौना पतोह ले उतमा घाट? चीनी जात्री लोग हमार चर्चा कइले बा, अंगरेज बहादुर किताब लिखले बाड़े सों। गान्ही महतमा आ राजिन्नर बाबू– दूनो संत राजनेता के आत्मकथा में हमार कथा बा, दोसर केहू लिखो भा मुंह मरावो!

आ हमार माटी? पूछीं मत, भगवान अपने हाथे चन्नन रगर के लगवने आ जवन बांचल ओसे हमार सिरजना कइने। कवन फसिल बा जवन एमे ना होखे। पानी पटाई, जिन पटाई, खादि डारी चाहे जिन डांरी– ई एक के एगारह करबे करी। केहू लोक कवि कहले रहे– 'धन्न देश मझौआ, जहां भात ना पूछे कौआ' माथे पर सोमेश्वर पहाड़ी के मुकुट आ गटई में नारायनी हंसुली, सिकरहना के कृष्णचूनी आ बागमती के किनारीदार सारी, तीन तीन गो नहर के तिलड़ी हार आ गोदी भरल– बलिदानियन से, कवियन से, गवइयन से। बाकिर हमरे पुतवन में एगो दोष ह– मुंहजोर ना होले सों। आपन ज्ञान, आन गुन, आपन कला, आपन किरित– अपने मुहें बखाने ना जाने। केहू जौहरी होखो त हीरा के कीमत जानो, ना त 'रहिमन हीरा कब कहे लाख टका मम मोल'। आज के दुनिया गलगर के बा, विज्ञापन के बा, तमाशा के बा– एसे हमार 'प्रसाद,' हमार प्रेमचन्द – उजागिर ना हो पावत बाने। चन्द्रशेखर धर मिश्र, श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती', हरिहर प्रसाद 'रसिक', पीर मुहम्मद मुनीस, ब्रजकिशोर नारायन, गोपाल सिंह नेपाली– ए हीरन के मन लगाके ईमानदारी से तराश दीं त हिन्दी साहित्य के इतिहास के खन्नक बढ़ जाय। प्रकृति का गोदी में खेलला के एक से एक अनमोल गीत उ देश खातिर सरबस होम क देवे के एक से एक उछाह भरल कविता के रचाई इंहां भइल बा। बेजांय मत मान त बनारस आ इलाहाबाद के विद्वमान लोग कविताई के मेंड बान्ह देला आ बाकी सब तपेस्या अकारथ हो जाले। गणेश चौबे, बलदेव प्र. श्रीवास्तव, विन्ध्याचल प्र. गुप्त, चन्द्रधर

मिश्र निशानाथ' (बुकानन जी), रमेश चन्द्र झा, गणेश विशारद, कामेश्वर 'विद्रोही, सरयू सिंह सुन्दर, सीताराम सिंह 'स्यामल' प्रधुम्न प्रकाश, ब्रजबिहारी प्र. चूर, सच्चिदानन्द मिश्र, विष्णुकान्त पाण्डेय, महंथ धनराजपुरी, कमलाकान्त शास्त्री अउर मधुसूदन प्र. मिश्र 'मधुर' जइसन लोग हरमेसा अपने जुग से, समाज से जुड़के सरस्वती के मंदिर में घरीघंट बजावल। एमे अकेले गणेश चौबे जी के पाके कवनो जगह तीरथ हो सकेला– हम त अपने गोदी में चन्द्रधर मिसिर के, रमेश चन्द्र झा के, विष्णुकान्त पान्डे के, रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' के खेलवनी खिअवनी आ कविता– साधना गवाह बननी। चौबे जी भोजपूरी के दधिचि रहीं, लोकगीतन के व्यास रहीं। ऊँहा के मेहनत से सरभंग सम्प्रदाय के संत कवियन के खोज भइल, थरूहट के गीतन पर देश भर के नजर गइल। लोक कला के मेहीनी के चर्चा चाहे पटना में होखे चाहे गुजरात में– चौबे जी के बिना पूरा ना होला। चन्द्रधर मिसिर जी 'निराला पंथी' रहनी, जिनगी आ साहित्य में एक्के पत्ता खेले वाला। रमेशचन्द्र झा आदमिओ के नाव ह आ संस्था के। ऊँहा के साहित्य के हर विधा में लिखनी– 'गद्य में, पद्य में समाभ्यस्त'। विष्णुकान्त जी सबसे सुकुआर काम कइनी। बाल साहित्य लिखल, कच्चा गगरी पर बेलबूटा काढ़ल ह हाथ तनिको बिचलल कि बात बिगड़ल। पांडे जी के सधल हाथ अचूक बा। 'अलमस्त' जी पिओर लोकजीवन आ लोक भाषा के कवि रहनी। 'तोहरे घरवा में पइसल बा चोर, अंजोर करके देख भइया' हमरे गांव गांव में गूंजल रहे। भोजपूरी भाषा पर व्यंग्य के जवन धार 'अलमस्त' जी धइनी ओकर सरबर धरीछन मिसिर जी के छोड़ि के दोसर ना मिलेला।

. एकरे बाद के पीढ़ी में गणेश पाठक 'बिसारद', पाण्डेय आशुतोष, विमल राजस्थानी, दिनेश 'भ्रमर', राजेन्द्र 'अनल', मनोरंजन 'अंगार', अश्विनी 'प्रदीप', अखिलेश्वर सिन्हा, 'अखिलेश' अउरी अन्थोनी 'दीपक' के नाव प्रमुख बा। दिनकर जी के ओज आ नेपाली जी के लयदारी– दूनू धारा के झलक आशुतोष जी में देखाई पडेला। ऊँहा के रणजीत सिंह दयाल के गोहरा के देश के जवानी, मर्दई अउरी बलिदान के छन्द रचेनी आ टटका बिम्बन से सजल नवगीत भी गावेली। 'भ्रमर' जी चौपारन के 'बिहारी' हई– एक एक छन्द पर एक एक अशर्फी के हकदार। कम लिखेनी, बाकिर साफ अउरी सुन्नर लिखेनी।

नयकी पीढ़ी में डॉ. जगदीश 'विकल', वीरेश्वर तिवारी, अखिलेश्वर नाथ त्रिपाठी, रविकेश मिश्र, सतीश राय 'अनजान', शोभा कान्त झा, गोरख मस्ताना, अरूण गोपाल, चन्द्रमोहन मिश्र 'दर्पण' अउरी अरून चम्पारनी के नाव उजागिर होता। विकल जी प्रगतिशील कविताधारा से जुड़ल बानी, वीरेश्वर तिवारी जी भोजपुरी में 'लंका विजय' महाकाव्य रचले बानी। अखिलेश्वर जी में नई आ पुरानी, दूनो भाव धारा के संगम बा, रविकेश मिश्र में जिनगी के दुतरफा धार उचरल बा। गोरख मस्ताना मंच पर भोजपुरी व्यंग्य के कारन सुनवैइन के मन मोह ले लें। बस, हम हीं चम्पारन हईं !

–प्राध्यापक, गिरिधरन मिश्र,
हरिशंकर पाठक कॉलेज, बगहा
चम्पारन

डॉ. राम विचार पाण्डेय

व्यक्तित्व आ कृतित्व

(डॉ) आद्या प्रसाद द्विवेदी

स्व. डॉ. रामविचार पाण्डेय जी के जन्म ३ मार्च सन १६०० ई. में उत्तर प्रदेश के बलिया जिला के एक छोट गांव दामोदरपुर में भइल रहे। पहिलकी पढ़ाई लिखाई गावें के प्राइमरी स्कूल में भइल। हाईस्कूल तक के शिक्षा बलिया शहर के गवर्नमेंट स्कूल में भइल। एकरा आगे के पढ़ाई काशी में भइल जहंवा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ई बी.ए. के परीक्षा पास कइलीं। इहां के हिन्दी विषय से एम.ए. के डिग्री प्राप्त कइला के बाद सतीश चन्द्र कालेज बलिया से एल.एल.बी. के परीक्षा पास कइली। वकालत के पेशा में इनका मन नाहीं लागल अवर इहां के डाक्टरी के पढ़ाई करे बदे दरभंगा मेडिकल कालेज में दाखिला ले लिहलीं। इनके अचरज भरल विद्या व्यसन के अनुमान ये ही बात से लगावल जा सकाला कि इहां के पैसंठ बरिस के उमिर में दरभंगा मेडिकल कालेज से एम.बी.बी.एस. के डिग्री प्राप्त कइलीं। ये ही समय आप होम्योपैथ के भी परीक्षा के तइयारी में लगि गइलीं आ बिहार के एक कालेज से एल. ए.एम.एच. के डिग्री प्राप्त कइली। एलौपैथ अवर होम्योपैथ में डिग्री पवले के बाद पांडे जी आयुर्वेद के भी पढ़ाई में लागि गइली। कवनो कालेज भा विश्वविद्यालय से आयुर्वेद के डिग्री न पवले के वादो आप नीम्मन ढंग से एलोपैथ के संगे–संगे आयुर्वेद के पद्धति पर दवाई कइल शुरू कइलीं। बलिया में आपके प्रेट्रिस खूब चलल आ आप खूब धन कमा लिहलीं। अपने डाक्टरी जीवन से आप धन त कमा लिहली लेकिन आप के ढेर शोहरत डाक्टरी से नाहीं मिलल बलुक अपने माई के बोली भोजपुरी के सेवा कइले खातिर मिलल।

डा. पाण्डेय जी के जिनगी उछाह मस्ती से भरल रहे। ई प्रेम आ साथ के निरवाह कइल खूब जानत रहलन। उनके एक अवर खूबी रहे। उ ई कि जेकरा से इनका नफरत हो जाय ओकर इहां के भुलाइयों के नाम ना लेत रहलन। पाण्डेय जी अपने व्यवहारिक जिनगी में रिवसियाह ना रहलन, चिड़चिड़ाह ना रहलन। बाहर के लोग उनकर सोच आ मीठ सुभाव के देखत चलि आवत रहन लेकिंन उनके भीतर गम कम ना रहल हा। लेकिन पाण्डेय जी ओह जहर के पीके, पचा के, भीतरे राखत रहलन हा। केहू से छोट भा बड़ मिले के बेरा उनकर हसंमुख चेहरा लउकत रहल हा। उ मिलनसार रहलन हा। छोट–बड़ केहू से मिले में उ नाकुर–नकुर ना करत रहलन हा। सबसे मिलि के उ खुश होत रहलन। भोजपुरी बदे कुछ करे के सलाह देत रहलन हा। छोटो कवि के ऊपर उठावे के उ पुरहर जोर लगावत रहलन हा।

पाण्डे जी के ऊपर लछिमी जी आ सरस्वती जी दूनो जना के भरपूर कृपा रहल हवे। बुझाला एही से उनकर सेवा करे खातिर दूनों देवी लोग पत्नी रूप में इनका के लगे आइल रहलीं। पहिल की पत्नी के संगे पाण्डे जी के जिनगी ढेर दिन ले नाहि चलि पवले। ओनके तन छोड़ला के बाद पाण्डे जी के विआह रामरती देवी से भइल

इहां के भी दरभंगा से ही डी. एम.एस. (आनर्स) के डिग्री प्राप्त कइलें रहीं। रामरती जी पाण्डे जी के बीमारी में जेतना सेवा कइलीं ओतना का केहू के परानी अपने पति के सेवा कइले होंई। पाण्डे जी के तन छोड़ला के बाद रामरती जी पाण्डे जी के इयाद में कई गो सामाजिक साहित्यिक संस्थान के नींव डललीं। जवना में एक संस्था आजुओ चलि रहल बिआ।

पाण्डे जी केहू के बिगारू ना रहनल हा। प्रपंच आ दांव पेंच से उ हमेशा दूर रहसु। गंदी राजनीति आ छोट तिकड़मी कवियन के प्रपंच से हमेसा दूर रहि के अपने अकेले कविता के रस में डूबत उतरात रहें। सभा सोसाइटी आ कवि सम्मेलन के मंच पर गुटबाजी से अलग हटि के उ अकेलेहू विचरत रहलन। दू टूक बात कइलें में उनके कवनों जोड़ नाहि रहे। एक बेर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य अधिवेशन के सीवान में आयोजित कवि सम्मेलन में कुछ लोग उनका के परीक्षा लिहल चहलस। परीक्षा बदे एक समस्यापूर्ति "सुबह सुबह आंगन में चूनरी पसारे के" रक्खल गइल। पाण्डे जी पे समस्या के ऋंगार, बीर अवर हास्यरस में पूर्ति कके लोगन के सोझे अपने प्रतिमा आ कवित्व शक्ति के अदभुत उदाहरण प्रस्तुत कइलीं। लोग इनके लोहा मानि लीहल।

पाण्डे जी दिलदार आदमी रहलीं। उहां के रूपयां–पैसा के बहुत भुखाइल ना रही, हा सनेह आ मान के अवश्य भुखाइल रहीं। सहज भाव से, अपने पुरूषार्थ से जवन कुछ मिल जाय ओही पर उहां के प्रसन्न रही। जहां केहू मान से उनके बुलावे ओकरे कार्यक्रम में उहां के जरूर सामिल होखी। कुल मिला के संक्षेप में इहे कहल जा सकाला कि पाण्डे जी के व्यक्तित्व एक बहुते साफ आ नीम्मन तथा पुरूषार्थी आदमी के रहे। उनके अइसन स्वभाव आजु के साहित्यकार खातिर नकल करे लायक बा। डा. राम विचार पाण्डे के रचल कृतियन में 'बिनिया बिछिया' 'आसा,' 'जीवन गीत' गुरूम्हा आ 'शहीद मंगल पाण्डे' नाटक प्रसिद्ध हवे। इनके कविता में व्यंग्य आ हास्य रस के भरपूर प्रयोग दिखाई देला। इनके एक कविता के शीर्षक हवे पंचम पेंच वर्षीय योजना। ये कविता में सरकार के परिवार नियोजन योजना के खिल्ली उड़ावत कई गो विवाह कके ढेर लइका पैदा कइले के स्कीम बतावल गइल हवें।

पाण्डेय जी के भोजपुरी बहुत सरल आ लयदार हवे। ठेंठ शब्द आ मुहाविरा से इनके भोजपुरी बहुत मोहक हो गइल हवे। इनके रचल अजोरिया नामक कविता ढेर प्रसिद्ध हवे जवना में सवैया छन्द में सन्दर्भ के ढलले के प्रयास कइल गइल हवे। एक नमूना देखी–

तिसुना जागलि सिरि किसनुा के देखे के त,
आधी रतिये खा उठि चललि गुजरिया।
चान का नियर मुंह चमकेला राधिका के,
चम चम चमकेले जरी के चुनरिया।
चकमक–चकमक लहरि उठावे ओमें,
मधुर मधुर डोले कान के मुनरिया।

गोखुला के लोग ई त देखि चिहइलें कि,
राति में अमावस का उगलि अंजोरिया।

ये छन्द में श्रीकृष्ण से भेट करे खातिर जाये वाली राधिका जी के मिलन के वरणन कइल गइल बाटे। राधिका जी जरीदार साड़ी पेन्ह के कृष्ण से मिले बदे अमावस के अन्हार राति में जा रहल बानी। ओ घड़ी उनके शरीर के चमक येतना अधिक बा कि मालूम पड़त हवे कि अमावस के दिन चांद निकरि आइल बा। ये संवैया के भाव एतना सुन्नर बा कि केतना तारीफ कइल जाय। ये ही तरह के एक अवर चित्र देखल जाय।

फूल का सेजरिया पर सुतल कन्हैया जी,
सपना देखेलें कि जरत दुपहरिया,
ओकरे में हमरा के रधिका खोजत बाड़ी
पेड़ नइखे, रूख नाही, जल बा कगरिया।
कहताड़ी धाव कृष्ण, धाव, कृष्ण, आव राजा,
हमके देखाद तनि गोखुला नगरिया।
अइलीं राधे, अइलीं राधे, कहि के जे उठलीं त,
एने फूलल कमल ओने चढ़ती अजोरिया।
सूरज के देखिके कमल खिलेला। आ चनरमा के देखि के कुइयां।

ई एक पुरान कवि सत्य चलि आ रहल बा लेकिन इहां पाण्डे जी चनरमा के देखि के कमल के खिलल प्रस्तुत कइलें बाटें। राधिका जी चनरमा माफिक रूपवाली बाटीं अवर किशुन जी के मुंह कमल माफिक सुन्दर बा। जब किशुन जी राधिका जी के सपना में देखत हवें त प्रसन्न हो जात हवें। ये ही भाव के करिवे अजोरिया देखि के कमल फूल के खिलले के चित्र प्रस्तुत कइले हवे। ये कविता में इ विरोधी भावन के दृश्य बड़े कलाकारी से उभारल गइल बा। भोजपुरी मुहावरन आ खारी भोजपुरी शब्दन के परिचय पावे बदे पाण्डेय जी के 'अंजोरिया' कविता के एक अवर नमूना देखीं–

हमके बोला लीतू अइलू हा कइसे हो,
बड़ी भाकासावनी भइलि बा अन्हरिया।
कसबा के राकस घूमत बढ़वार बाड़े,
गोखुला में कबो कबो होत बाड़े चोरिया।
सभ के ठगेल कृष्णा हम के भोराव जनि,
हाथ हम जोरि के करी ले गोड़धरिया।
हिरदया में जेकरा त तू ही बइसल बाड़
ओकरा खातिर ई अन्होरियो अजोरिया।

ये में 'गोड़धरिया कइल' मुहावरा के सुन्नर प्रयोग भइल बा। अभिसार बदे जवन उत्तर राधिका जी के मुंह से कहवावल गइल बा उहो बहुत नीम्मन बा। डा. कृष्णदेव उपाध्याय जी, पाण्डे जी के अंजोरिया कविता के तारीफ करत कहलें हवें कि अगर ये कविता के अंग्रेजी साहित्य के क्लासिकिल पोपट्री के उपमा दिहल जाय त कवनो अनुचित नाहीं होई। चितबड़ा गांव बलिया में आयोजित एक कवि सम्मेलन के अवसर

पर पाण्डे जी के ये कविता के सुनि के भोजपुरी भाषा अवर साहित्य तथा भाषा विज्ञान के दिग्गज विद्वान डा. उदयनारायण तिवारी जी कहली कि पाण्डेय जी के अकेल एक कविता 'अंजोरिया' उनका के हिन्दी के बड़वर कवियन के कतार में खड़ा कइलें में काफी बा।

पाण्डेय जी के कवितन में प्रकृति के भी बहुरंगी चित्रउतरल बा। कहीं गांव के खेत के वरणन हवें। कहीं ताल तलैया के वरणन हवे, कहीं सरदरितु आ बरखा रितु के मनभावन चित्र उरेहल गइल बा। खेत जोतत एक किसान के एक चित्र एक कविता में देखी।

बीति गइले बरखा निखरि गइले पलिहर,
हर जोते बालमा चुअेले देहीं पनिया।
पड़रू के एक मुट्ठी लेहना विरावे के आ
दीहली मथुरही के एक नाद सनियां
उन्हुका के तिअना भा लिटी लेके पानी लेके
झटकल चलली सांवरि एक धनियां
लूगरी के तोपि तोपि ठमकि ठमकि चले,
छलकि छलकि उठे चढ़ती जवनियां।

पाण्डेजी अपने कविता में शब्द–प्रयोग के अतना आलंकारिक छटा देखवलें हवें कि ओकरे सनमुख रीतिकाल के नामी कवियन के भी हार मानि लेवे के परी। एक अइसने चमत्कार पूर्ण प्रयोग के नमूना देखीं–

पाई के हजार आंखि, इन्द्र बड़ा नीच भइलें,
बीस आंखि रावन, राकस होइ गइले।
आठ आंखि ब्रम्हा जी, काठ पर बइठलें,
तीनि आंखि शिव, बउडम होई गइलें,
दुइ आंखि वाला, दूनों आंखि देखे जगवा के
एक आंखि वाला, असगुनियां कहइलें,
हमनी के रहिया देखावे खातिर कलयुग में,
अंखिगर बनि के, कवि सूरदास अइलें।

रूप–वर्णन में भी पाण्डे जी के कवनो सानी नाही बा। नीचे एक चित्र देखी सभें जवना में रूप वर्णन के संगे संगे टटके नहइले राधा (साद्यःस्नाता) के वरणन बा आ चनरमा में दाग परला के कारणों दिहल गइल बा–

एक दिन जमुना में राधिका नहात रहली,
पानी के लसेरे तनी सारी सटि गइली।
लक्ष्मी जी देखली, उ लाजे कठुवा गइलीं,
भागि के परइलीं, अन्हारा जा लुकइलीं,
रति उनके देखलीं, त परि गइलीं करिया,
गवें–गवें, लाजे–लाजे, पाछे हटे गइलीं
चन्द्रमा जे देखते त अस हूक उठेले कि
ओहि हूके उनके छाती फाटि गइली।

भोजपुरी भाषा अवर साहित्य के उन्नति खातिर डाक्टर पाण्डेय जी बराबर चिन्ता करत रहीं। उनका सम्पूर्ण भोजपुरी सेवा पर प्रसन्न होके जब उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान उन्नीस सौ उन्यासी में उनके पांच हजार रूपया के इनाम दिहलस तब डाक्टर साहब के अस्सी बरिस के उमिर में चेहरा पर जवन उत्साह आ खुसी के लाली देखाई दिहलस त उनके एक गो रचल जागरन गीत के पंक्ति मन पर इयाद परि गइल–

तोहरा के बड़ी अबेरि भइल, चले के हाली हाली बा,
जाग ए भोजपुर जागि उठ पूरब में दउरत लाली बा।

'बिनिया बिछिया' पाण्डेजी के अइसन भोजपुरी कवितन के सजल गुलदस्ता हवे जवना में प्रकृति चित्रण के संगे संगे देस–प्रेम के भाव से भी भरल कविता हवे। ये पुस्तक से एक नमूना देखल जाव जवना में प्रकृति के मनोहारी छटा उरेहल गइल बा। ई कविता उनके 'बसन्त वरणन' से हवे–

अइली बसन्त ऋतु महुआ का कोंचवा में,
झांकि–झांकि, हंसि–हंसि आंखि मलकावेलीं।
सरिसो का फूलवा का पीयर चदरिया में,
तीसिया का फूल के बतीसी चमकावेली।

पाण्डेय जी क 'आसा' भोजपुरी के एक गो सफल खण्डकाव्य हवे यद्यपि ई किताब पाण्डे जी के शुरूआती दौर के कृति हवे बाकी ये में कवि के कविता के गहराई और प्रौढ़ भाव के दरसन भलीभांति हो जात बा। ये किताब में संस्कृत के द्रुतविलम्बित छन्द में भी कविता लिखाइल बा। एक उदाहरण देखल जा–

आसा बा एतने सदा चिरउरी मुन्नी सुनऽ ध्यान से,
जो तोके कबहूं भुलाई हम तऽ खेदी, बगेदी कतें।
ओहू में जनिह सदा हिया में बाटे इहे भाव जे,
आसा! तूं हमके तज न कबहूं ले ले रह गोद में

कविताई क्षेत्र से हटि के अगर पाण्डे जी के नाटककार रूप के देखल जा त कहल जा सकाला कि उनके लिखल नाटक "शहीद मंगल पाण्डेय" १९६० ई. में स्कूल, कालेज में मंचित होके जेतना नांव कमइला ओतना बलिया के अन्य नाटककार लोगन के नाही मिलल। आजादी के रक्षा आ, नयकी पीढ़ी में जोस भरे बदे ये नाटक के महत्वपूर्ण स्थान बा। ये कर एक सम्वाद त बहुत पसन्द कइल गइल–

सामने अंगार बा, बड़ा तेज धार बा।
जीत बा कि हार बा, देस के पुकार बा,
देस के गोहार बा, के कह तइयार बा।
ई सुनते सब सैनिक हाथ उठा के कहतारे–
सब केहू तइयार बा।

डॉक्टर पाण्डे जी भोजपुरी बोली के हिन्दी भाषा से अलग हटि के मानत रहीं। उनकर कहनाम रहे कि संस्कृत भाषा में जवन शब्द नाही हवे ओहू के संस्कृत के नांव पर गढ़ि के जवन फालतू शब्द हिन्दी में बनावल जात हवे ओसे हिन्दी आम लोगन से दूर हो जा रहल बा। जबकि भोजपुरी में ढेर सारा अइसन शब्द बांटे जवना

के रूप संस्कृत भाषा में देखल जा सकाला। उनके इहो कहनाम रहे कि भोजपुरी में सोचल, भोजपुरी में भासण दिहल आ भोजपुरी में पत्र व्यवहार कइल कवनों पिछड़ापन के चीज नाही हवे बलुक इ त अपने भाषा खातिर मान अवर आदर के बात हवे। उनका सोच रहे कि सरकार के सहयोग के बिना ए भाषा के नीम्मन ढ़ंग से विकास नाही हो रहल बा। उनके कहनाम रहे कि भोजपुरी क्षेत्र के लइकन के पढ़ाई लिखाई के व्यवस्था अपने माई के बोली भोजपुरी में ही होखे के चाही। भोजपुरी क्षेत्र के किसानन बदे जवन सरकारी स्तर पर पत्रिका भा समाचार रिपोर्ट छपे उ सभ भोजपुरी भासा में छपे, इ पाण्डे जी के सोच रहे। पाण्डे जी अपने सभ किताबन में 'आसा' नामक किताब के सभसे नीम्मन मानी। उनका कहनाम रहे कि ये ग्रन्थ के रचलाके बाद हमार मन उछाह से गदगद हो गइल। ये किताब में प्रसाद जी के 'आंसू' माफिक आनंन्द छन्द में जीवन के उलझन के सुलझावले के प्रयास कइल गइल बा। ये ग्रन्थ में ज्ञान, भक्ति आ योग के खण्डन कके आखिर में बतावल गइल बा कि आसा तू हमके तज न कबहू ले ले रह गोद में।

सचमुच बलिया के धरती पर जहंवा एक से एक महात्मा अवर क्रान्तिकारी लोग पैदा भइले वहीं एक से एक साहित्यकारन के पैदा कइले के सेहरा यकरे माथे पर हवे। ओही साहित्यकारन में पाण्डे जी के नांव भी सरधापूर्वक लिहल जा सकेला। इनके कविता आ 'भोजपुरी रत्न' पर प्रसन्न होके भारत के पहिलका राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी इनके 'भोजपुरी रत्न' के पदवी से विभूषित कइलीं। इनके एक कविता अजोरिया पर खुश होके महापण्डित राहुल जी इनके भोजपुरी काव्य साहित्य में अमर करे वाला बतवलें तथा भाषा वैज्ञानिक डा. उदय नारायण तिवारी जी ओं कविता के बार बार तारीफ कइलें। भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर डा. पाण्डेय जी के सन १९७२ में सम्मानित कइलस। ये ही समय जमशेदपुर के डा. रसिक बिहारी ओझा निर्भीक जी पाण्डे जी के एक लमहर साक्षात्कार छपले। पाण्डे जी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, जमशेदपुर अधिवेशन के अध्यक्ष पद के भी सुसोभित कइलीं। उत्तर प्रदेश सरकार के हिन्दी संस्थान १४ सितम्बर १९७६ के इनके पुरस्कार दे के सम्मान कइलस। भोजपुरी समाज कानपुर भी पाण्डे जी के अभिनन्दन पत्र आ पुरस्कार दे के सम्मान कइले हवें।

ये में कवनो सन्देह नाही के आधुनिक सुविधा से हीन बलिया जइसन छोट जगह में रहि के पाण्डे जी भोजपुरी भाषा अवर साहित्य खारित जेतना काम कइलीं ओतना ढ़ेर सुविधा लेके भी आजुले केहू क नाही पा सकल। अइसन विद्वान खातिर बलिया के लोग कुछ नाहीं कइले उल्टे उनके मुअला के बाद उनके नांव पर फर्जी संस्था बना बना के आपन मतलब सिद्ध कइले के कोसिस हो रहल बा। अइसन रोजगार बन्द होखे के चाही तबै उनके आत्मा के सान्ति मिली। तबे उनके प्रति सच्ची सरधांजलि प्रगट हो पाई।

रीडर और अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सतीश चन्द्र स्नातकोत्तर कालेज
बलिया (उ.प्र.)

सिकार-कथा

त, बाघ त भाग गईल!

—नन्देश्वर पाठक

पूस के महिना रहे, आ सजोर जाड़ परत रहे। हमरे घरे के बड़–बुढ़ दुआरे बइठ के कउड़ा तापत रहलन। एतने में गऊवे के वुन्नन साव अइलन आ हमरे बाबूजी से लगलन बतिआवें। बात ऐने–ओने घूमत–घामत सिकारे पर आ गईल।

हमार बाबूजी स्व० गुंजेश्वरी पाठक जी जवार के एगो नामी सिकारी रहनी। उहां के अपने जिनगी में दूगो बाघ, ऐगो चीता अउरी चारगो भालू के सिकार कइले रहनी। एकरे अलावे बनइला सुअर, साम्हर, हरना अउर केतना मरनी ऐकर कवनो गिनती नइखे।

बाते के सिलसिला में बुन्नन साव कहलन, बाबू रउरा हरदम सिकार में ज़ानी, जब कबो बाघे के सिकार में जाई त हमरों के सग्हे ले चली। हम कबो जंगल में जियत बाघ नईखी देखले।

हमार गांव नेपाल के सिवाना से सटले बा। गांव के आगे चार माईल से घनघोर जंगल शुरू हो जात रहे जंगल त अबो बा बाकिर लकड़ी चोर अब ओके घन–घोर कहे लायक नईखन छोड़लेसन उ नेपाल के जंगल से मिल गइल बा। ऐसे इहां के जंगल में सब किसिंम के जीआ–जानवर जइसे रायल बंगाल टाईगर, चीता (तीनों तरह के) भालू, गेंडा, अरना, भइसा, साम्हर, चीतल, हरिन, सूअर, नील गाय, सब। अब त ई हाल बा कि रायल बंगाल टाईगर २१ गो कहे के बचले बा, काला हिरन (ब्लैक बक) त खतमें हो गईल।

ओही दिने बात उहे ओरा गईल। बाबूजी उनकरासे कहनी कि जब बाघे के कहीं खबर लागी त तोहरा के सग्घें लिआ लेब।

जेठ के महीना आईल। गरमी खूब परत रहे। एक जने थारूभाई थरूहट के बईरिआ गांव से अइलन। उ हमार, बटाईदार रहलन। बाबूजी से कहलन कि काल्ह हमरे गाय के बाघ तूर देहलेबा। नीक, होइत रउरा चलिके ओके मुआ देती।

बइरिआ हमरे घर से १४ माईल दूर वनबहरी गांव रहे। बाबूजी उ थारू भाई से कहनी कि विहान सांझी ले हमनी के आईल जाई, तले तू जाके बाकी तइआरी करीह। उनकरा सग्धे एगो नोकरो भेज दीहनी। जवन बराबर सिकार में रहत रहे। ओकरा के सब बात बुझा के —जइसे मचान कहां बन्हाई, सिकार के टोह लेवे के आदी। उ दूनू जने ओही बेरा बइरिआ चल दीहले।

बिहान भईल। हाथी पर हउदा कसाइल सांझी के पांच बजे के करीब बाबूजी बुनन्न साव अउर ऐगो दुसर सिकारी संग्धतिया जेकरा लगे २७५ बोर के रायफल रहे बइरिआ पहुंचल। तले हमनी के सिकारी नोकर सब इन्तजाम ठिकिया देले रहे। मरही बान्ह देले रहे। मचान लग ही एगो पेड़ पर लगभग १८ से २० फुट के ऊँचाई पर तइयार रहे। उहां से मर ही साफ देखात रहे। बाबूजी दिन अछइते जाके सब तइयारी देख लेहनी। तय भइल की सात बजे चल के हमनी मचान पर बइठ जाईल जाई।

बाघो के कुछ आपन आदत होला, पहिले उ जानवर के मार के ओके खून पी, फेरू दू–तीन दिन बाद जब ओमे (मरल जानवर) सड़ाध पैदा होखे लागी, तब आके खाइल शुरू करी। दू दिन खून पीयला से नीसुआ

के लगही थोर का दूर पर बेत भा कवनो दूसर झार झंखाड़ा झाड़ी में सुतल रही। वइसे बेत के झाड़ी ओकनी के बड़ नीक लागे ला काहे कि उ घन अउर कांटदार होला। उहां कवनो जनावर ना जाये के चाहेला। आ उ (बाघ) कबो एक लपक आके आपन सिकार देख के फेरु जाके सुत जाला।

सांझी के साढ़े सात बजे खा–पीके सभे सिकारी सिकार के जरूरी समान से लैस होके हाथी से जाके मचान पर बैठ गईल लोग। राहे में बाबूजी बुन्नन साव के समझा देहनी कि मचान पर बैठला के बाद कुछ बोलीह मत ना हिलीह डोलिह बस चुप चाप तमाशा देखिहा।

रात गरूआये लागल झींगुरन के झनकार से जंगल झंझना उठल। तीनो सिकारी सांस रोक के बाघ के अवाई जोहे लगलन। सभे आंखि मरही पर गड़वले रहे। बाबूजी बुन्नन साव से कहले रहनी की जब हम तहके पीठ में खोदेब त तू पंचसेला टरच सिकार पर बार दिह। जइसे ही टरच बरब, हम ओके गोली मारब, तू बरल ही रही ह बुतइह मत।

हं त अब एह सिकारी लोगन पर डोसी (जंगली मच्छड़,) रही–रही के हमला बोलेस लेकिन बाघों के अगोरल कवनो तपस्या से कम ना होला। तनीको खुटूर पुटूर भईल कि बाघ राम दू एगारह भईल। बुन्नन साव के अब बुझाइल के बाघ के सिकार ठठा नाह। उ सिकार में गईला के फेर में पड़ गईल रहले। मन ही में गुने लगले कि कहां से कहां हम बाबू से बाघ के सिकार देखे के कह दिहली। उनकरा अब जाके थाह चलल की ऐमे मजा नईखे बलुक बड़ा कष्ट बा।

तीनों जने के मचान पर बइठला करीब दू घन्टा हो गईल रहे। अंजोरिआ डूब गईल। रात के करिआ रोसनाई पसरल जात रहे। ओही बेरा भुईआ गिरल सूखल पत्ता चरमरा उठल। आवाज फेरू किछु देर खातिर बन्द हो गईल। फेरू बुझाईल कि पत्ता पर कबनो भारी–भरकम जानवर थाहि–थाहि के आपन गोड़ बढ़ावत बा। ई धमक सिकारी लोग के मचान के लगे आके खतम हो गईल। कुछ बोकाहिन नियर बसाए लागल। सभे समझ गईल की बाघ आ गईल बा; आ मचान के निचही बइठ के हांफ रहल बा। ओके मारे के अब ए लोग के कवनो उपाय सुझात ना रहे। बाघ के घूमला से समूचा जंगल में शान्ति के राज छा गईल रहे। पहिले कबो–कबो हरिन के पीहकार सुनात रहे। अब उहो डरे दुबक गईल बाड़न सब। जब कबो बाघ जंगल में घूमेला त जनावर सब डर के मारे लुका जाले स अउरी बोलती बन्द हो जाला।

बाबूजी अउर दूसर सिकारी भाई मने मने सोचे लगलन कि का कइल जाय? कवनो चारा ना रहे। एही ताक में रहे लोग कि बाघ जब मरही के लगे जाय तब फायर कईल जाय। एक ब एक ओ लोग के कान खड़ा हो गईल। ई टप–टप के आवाज कईसन हवे? सभे चिहां उठल जब टप टप के आवाज छर छराहट में बदल गईल। एईसन लागत रहे कि कहीं गाछी के ऊपर से पानी गिरता। मने में सोचे विचारे लगलन कि [illegible] गाछी पर बानर होई। उहे पेसाब करत बा। अब हीं ई गुनते रहे लोग तले बाघ धीरे से गुर्राइल आ एके कुलाछ में सामने झाड़ी में घुस गइल। बाबूजी अफसोस करे लगनी कि एतना बड सिकार हाथ से निकल गइल मगर बाघे के भागे कारन

समझ में ना आवे। जब बाबूजी के पूरा विश्वास हो गइल कि बाघ कहीं दूर भाग गइल त उ लोग आपस में बोलल शुरू कइल लोग काहे कि जब बाघ मरही के लगे आके कवनो कारन से भाग जाय त दोबारा जल्दी से ना आवेला।

बाबूजी बुन्नन साब से कहनी –भाई ना जाने कवन वजह भईल ह कि निसाना में आइल बाघ भाग गइल, लेकिन एही बेरा ई पानी कहां से गिरत रहे। कुछ समझ में नईखे आवत। साव लजाते कहलन –का कही बाबू। जब हमरा ई मालूम भइल ह कि बाघ ठीक हमनी के नीच ही आके बइठल बा त मारे डर के......सुनते जोर के ठहाका लागल। लगातार ठहाका के बाद जब हंसी ठमकल त सही बात के थाह चलल। बाघ बेचारा सोचलस, ई सुनसान जंगल में गरम पानी के सोता कहां से ओकरा मुंह पर फूट पड़ल। बस गुर्रा के कुद गइल।

अब राय भइल कि बइठल बेकार बा। एही से तब आतिसबाजी वाला कारतूस बन्दूक के बुलेट निकाल के नाल में भर दिहल गईल। आ आसमान में फायर दगाईल। सगरे आसमान में कचनार के फूल खिल उठल साथ ही कसके धमाका के आवाज पहिले अउर पाछे में भईल। आवाज के संगही रंग बिरंगा फूल कुम्हलाके मेटा गइल।

लगही गांव में रुकल महाउत फुलझरी के धमाका सुनके ई समझ लेहलस की मालिक बोलावत बानी। इहे भाखा ओके समझावल रहे, हाथी के मचान लगे लावे के। हाथी के अइला पर सभे सिकारी हंसत आ कुफ़ताईल मन से पड़ाव के ओरी चल देहले।

'सांई प्रसाद'
पठखौली, बगहा–२
प. चम्पारन

गजल

जिन्दगी सहकल रहे
मन तनी बहकल रहे
तन–बदन के के कहो
सांस ले दहकल रहे
मन के वन में आग जस
जाने का लहकल रहे
चाँद के आगोश में
चाँदनी टहकल रहे
रातरानी रात–भर
प्यार से महकल रहे

–पाण्डेय कपिल
इन्द्रपुरी, मार्ग–३, पटना–२४

गीत

–उमेश कुमार पाठक 'रवि'

आजु बाजे द बँसिया के तान हो,
आजु बाजे द।
सूनी डगरिया में बीहड़ बधरिया में,
मनवाँ पुकारेला कुच–कुच अन्हरिया में,
आजु आवे द सुन्दर विहान हो, आजु बाजे द।
आहि–आहि करे ई पछिया बयरिया,
सन–सन लूक झरे काँपे बधरिया,
आजु उगे दं फूहा के चान हो, आजु बाजेद।
रकते रंगल अखबारन के पाना,
डाह बा धरम जाति भाषा के नाना,
आजु गूँजे द मधुबन के गान हो, आजु बाजे द।
मरघट बनत जाता सांचो वतनवाँ,
चारू ओरि आगि जोर कुहुके परनवाँ,
आजु बरिसे द बदरी से बान हो, आजु बाजे द।

द्वारा,- कमल बिहारी पाण्डेय
विश्वामित्र कॉलोनी, चरित्रबन
बक्सर (बिहार) ८०२१०१

दुनियां में कुछू बनावट भी चाहीं। ज्यादे खुलल आ हार्दिक रहले के कायदा इहां ना बा।

–जैनेन्द्र कुमार

द्वितीय भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन

अध्यक्षीय भाषण (हिन्दी में)

अध्यक्ष

–डॉ. राजबली पाण्डेय

(महामना मालवीय प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग, जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर। भूतपूर्व प्राचार्य, भारती महाविद्यालय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।)

मई, १९६५

भोजपुरी संसद के सदस्यगण, भोजपुरी के प्रेमीजन, साहित्यकार, कविगण, अन्वेषक, देवियो और सज्जनों,

मैं सम्मेलन के आयोजकों का बहुत आभार मानता हूं कि इन्होंने इस समारोह की अध्यक्षता करने का मुझे निमन्त्रण दिया। भोजपुरी भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रति मेरी कोई सेवा नहीं। मैं तो ऐसा मानता हूं कि आप की शुद्ध कृपा और स्नेह है कि आपने इस अवसर पर मुझे याद किया। इस अकारण कृपा का एक ही आधार मुझे जान पड़ता है। वह है यह तथ्य कि मेरी भी मातृबोली भोजपुरी है और भोजपुरी क्षेत्र में ही मेरा पालन–पोषण तथा शिक्षा–दीक्षा हुई। परन्तु शायद यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि अपने शैशव और स्कूली दिनों में मुझे यह नहीं मालूम था कि अपनी बोली का नाम भोजपुरी है। आज तक मेरे जिले देवरिया की ग्रामीण जनता यह नहीं जानती कि उसकी बोली भोजपुरी है। पण्डित लोग बोली को भाषा और गंवार लोग हिनुई (हिन्दुई–हिन्दी) कहते हैं। कुछ ही वर्ष पहले जब देहातियों में कोई खड़ी बोली (हिन्दी) बोलने का प्रयास करता था तो लोग व्यंग्य करते थे: "का अरबी फारसी छांटत बाट", देसी कौआ मराठी बोल आदि। किन्तु इतिहास का कुछ ऐसा चक्र चला कि जिस बोली को मजाक में अरबी फारसी कहते थे वही हमारी शिक्षा दीक्षा और सांस्कृतिक तथा शासकीय व्यवहार का माध्यम बन गयी। जनगणना में भी हम अपनी मातृभाषा हिन्दी लिखते हैं। भोजपुरी क्षेत्र के लोगों ने हिन्दी को इतने सहज और सरल भाव से अपना लिया, इसका कारण स्पष्ट है। वे अपनी बोली को हिनुई (हिन्दुई–हिन्दी) मानते ही थे। अब खड़ी बोली अरबी फारसी का दामन छोड़कर उनके सामने खड़ी हुई तो उन्होंने उसको पूर्ण रूपेण अपना लिया। भोजपुरी क्षेत्र के लोगों में एक और विशेषता हैं जब अपने राष्ट्र और संस्कृति के विकास और समृद्धि के लिये कोई महान प्रयत्न होता है तो वे उसके

सामने अपना सर्वस्व निछावर करने को तैयार रहते हैं। आधुनिक युग में हिन्दी का विकास राष्ट्र की एक महान और विशाल अभिव्यक्ति के रूप में हुआ जो बिहार से लेकर पश्चिम में सीमान्त तक और उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विन्ध्य के उस पार तक जीवन का माध्यम बन गया। इस महान राष्ट्रीय यज्ञ में भोजपुरी की विभिन्न शाखाओं की आहुति हो गयी। इससे भोजपुरी का लाभ ही हुआ। उसके वरदपुत्र हिन्दी के सच्चे सेवक और उन्नायक बन गये। हिन्दी के अन्वेषण, शोध, अनुशीलन और साहित्य सर्जन का केन्द्र भोजपुरी क्षेत्र के हृदय काशी में आ गया। आधुनिक युग में जिन दो महान संस्थाओं–नागरी–प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य–सम्मेलन–ने हिन्दी के अधिकार, प्रसार और सम्बर्द्धन में सबसे अधिक भाग लिया, उनका उदय भोजपुरी क्षेत्र में ही हुआ।

वास्तव में पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में बोली जानेवाली भाषा भाषा ही थी जो आधुनिक विशाल टकसाली बहुप्रचलित हिन्दी भाषा में मिल गयी, अविच्छिन्न, अविभाज्य रूप से, दूध–मिश्री की तरह, दूध–पानी की तरह। अब दोनों को अलग करना सम्भव नहीं, वांछनीय भी नहीं! बोली का भोजपुरी नाम भाषा विज्ञानियों का दिया हुआ है जिसमें अव्याप्ति दोष है। हाँ, हमने इस नाम को काम–चलाऊ समझ कर मान लिया है। प्रयाग के पास एक सीधी लम्बवत रेखा खींची जाय तो इसके पूर्व प्रायः गया के पश्चिमी छोर तक हिमालय और विन्ध्य के बीच की भाषा पूरबिया (पूर्वीय) भाषा है। मनुस्मृति के मध्यदेश (विनशन से प्रयाग) के पूर्व प्राची की भाषा को ही आजकल हम भोजपुरी कह रहे हैं। प्राचीन भाषायी वर्गीकरण में इसका नाम मागधी–अर्द्धमागधी था जो इसको शौरसेनी और महाराष्ट्री से अलग करता था। आधुनिक वर्गीकरण के अनुसार यह भोजपुरी बोली तीन शाखाओं में विभक्त है – (१) मल्लिका (२) काशिका और वज्जिका। मल्लिका का क्षेत्र हिमालय और टोंस नदी के बीच में है जिसमें बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, उत्तरी आजमगढ़ बलिया और आरा सम्मिलित है। काशिका के क्षेत्र में वाराणसी, गाजीपुर, मिर्जापुर, दक्षिणी आजमगढ़ और जौनपुर शामिल है। वज्जिका का क्षेत्र उत्तरी बिहार है। जिसमें सारन, चम्पारण, मुजफ्फरपुर का पश्चिमी भाग और नेपाल की तराई सम्मिलित है। इस प्रकार यह भाषायी क्षेत्र बहुत विस्तृत है और भोजपुरी बोलने वालों की संख्या लगभग पांच करोड़ हैं

इस भोजपुरी–क्षेत्र का इतिहास गौरवशाली हैं भारत के साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास में इसकी बहुमूल्य देने हैं। यह इतिहास इस क्षेत्र की शक्ति और संभावनाओं को पुष्ट करता है। प्राचीन जनपदों में कोसल और काशी का इतिहास, वैशाल–विदेह का इतिहास, करूष का इतिहास भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण अध्याय हैं। पौराणिक और धार्मिक इतिहास में कोसल वैष्णव–धर्म और काशी शैव धर्म के केन्द्र रहे हैं। शैव धर्म का उदगम और विकास काशी में ही हुआ। काशी ही शिव की अविमुक्त नगरी और आनन्द कानन है। यहां से ही वह समस्त भारत

और भारत के बाहर दक्षिण–पूर्व एशिया, पश्चिमोत्तर भारत होता हुआ मध्य एशिया और पश्चिमी एशिया तक पहुंचा। वैष्णव–धर्म का परमधाम साकेत (अयोध्या) कोसल में ही है जहां विष्णु का मर्यादावादी लोक–संग्रही अवतार राम के रूप में हुआ। इसी के पूर्व भाग शाक्य–जनपद में विष्णु का दशम अहिंसावादी अवतार बुद्ध के रूप में हुआ भगवान बुद्ध का प्रधान चारिका क्षेत्र यही था। इसी क्षेत्र के अन्तर्गत सारनाथ में बुद्ध ने अपना प्रथम धर्मचक्र प्रवर्तन किया। उनका महापरिनिर्वाण भी मल्ल–जनपद की राजधानी कुशीनगर में हुआ। बौद्धों के तीन प्रसिद्ध तीर्थ– (१) बुद्ध का जन्म–स्थान लुम्बिनीवन (२) धर्मचक्र–प्रवर्तन का स्थल सारनाथ और (३) बुद्ध की निर्वाण–भूमि कुशीनगर–इसी क्षेत्र में है। जैन–धर्म की दृष्टि से भी इस क्षेत्र का ऊँचा स्थान है। जैन–धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशीनगरी में हुआ। इन्होंने मानव जीवन की शुद्धि के लिये महाव्रतों को सुव्यवस्थित किया। भगवान महावीर का जन्म यद्यपि वैशाली में हुआ था, उनकी चारिका का मुख्य क्षेत्र भोजपुरी प्रदेश ही था। उनका निर्वाण भी मल्लों की दूसरी राजधानी पावापुरी (–वर्तमान सठियांव–फाजिल नगर) में हुआ। देवरिया के पास खुखुन्दु और सलेमपुर के पास कहांव जैन–धर्म के मुख्य केन्द्र थे। मध्ययुग में भी यह भाषा–क्षेत्र धार्मिक चेतना का केन्द्र बना रहा। आठवीं शती में जगदगुरू शंकराचार्य ने अपने शैव–धर्म प्रधान वेदान्त की स्वीकृति और प्रतिष्ठा के लिये काशी की यात्रा की। यह घटना इस बात का द्योतक है कि इस समय काशी की अखिल–भारतीय प्रतिष्ठा थी। गोरखपुर नाथ–पंथ का प्रमुख केन्द्र था, जहां योगिराज गोरखनाथ समाधिस्थ हुये। कबीर ने काशी से मगहर तक अपने सुधारवादी और समन्वयी धर्म का उपदेश किया। रामानन्द और तुलसीदास ने रामभक्ति और हिन्दी काव्य को प्रवाहित किया। सोलहवीं शती से तो काशी भारत के सभी सन्तों और आचार्यो की तीर्थस्थली बन गयी, जिनका भारतीय धर्म और संस्कृति के पुनरूत्थान में महान योग था। आधुनिक युग में भी जितने धार्मिक और सांस्कृतिक आन्दोलन हुये वे या तो काशी से प्रवाहित हुये अथवा उनकी धाराएं, अपने को पवित्र और पूर्ण करने के लिये काशी पहुंची।

इस क्षेत्र की राजनीतिक उपलब्धियां भी उल्लेखनीय हैं। कोसल के चक्रवर्ती राजाओं का इतिहास प्रसिद्ध है। अयोध्या के प्रथम चक्रवर्ती मान्धाता का साम्राज्य उदयाचल से अस्ताचल तक था। इसी परम्परा में रघुवंश के यशस्वी सम्राट और राजा हुये। कोसल–साम्राज्य के विघटन के पश्चात इसी के पूर्वी भाग में शाक्य, कोलिय, मल्ल, मौर्य आदि गणराज्यों का उदय हुआ, जिनकी संसदीय कार्य–पद्धति, संविधान और नियमबद्ध शासन हमारे लिए अनुकरणीय है। इन्हीं गणों में मौर्य–गण में चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म हुआ, जो आधुनिक इतिहास के नैपोलियन बोनापार्ट के समान गण–तंत्र में जन्म लेकर भी एक विशाल मगध का मौर्य साम्राज्य बनाने में समर्थ हुआ। भारत के सैनिक पराजय के कारणों में प्रायः बताया जाता है कि

पश्चिमोत्तर से आक्रमण करने वाली हट्टी–कट्टी जातियों ने गर्मदेश की शरीर से दुर्बल जातियों को परास्त किया। परन्तु चन्द्रगुप्त ने भोजपुरी क्षेत्र की रणप्रिय वाहिनी लेकर सिन्धु को पार किया और जगत विजयनी यवन सेना को परास्त किया। इतना ही नहीं उसने सिन्धु और हिन्दुकुश के बीच के समस्त प्रदेशों पर अपना अधिकार जमा लिया। मौर्यो के पश्चात पाटलिपुत्र और अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ करनेवाला **पूष्यमित्र शुंड.ग्** ने भी इसी क्षेत्र के सैनिकों को लेकर यवनों को मध्यदेश से निकाल कर पश्चिमोत्तर सीमा की ओर ढ़केल दिया। कुषण–साम्राज्य के ह्रास होने पर जब गुप्तों के नेतृत्व में भारत का पुनः राजनीतिक पुनरूत्थान हुआ तो **प्रयाग**, साकेत और मगध के बीच का भोजपुरी क्षेत्र ही उनकी शक्ति का केन्द्र **बना। इस वंश** के प्रथम सम्राट समुद्र गुप्त ने सम्पूर्ण आर्यावर्त और समस्त दक्षिणापथ **पर विजय** करने के पश्चात पश्चिमोत्तर सीमान्त के शाहानुशाही शकमुरूण्डों के **अधीन** मैत्री स्वीकार करने के लिये विवश किया। इसकी यश–गाथा प्रयाग जयस्तम्भ पर आज भी अंकित है। गुप्त–वंश का दूसरा सम्राट द्वितीय चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने भी इसी क्षेत्र को केन्द्र बनाकर बंगाल से बलख और हिमालय से दक्षिण समुद्र तक के प्रदेशों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। पूर्व मध्ययुग के अन्त में गहडवाल वंश की प्रथम राजधानी वाराणसी ही थी। यहीं से गोविन्दचन्द्र ने तुर्कों के विरूद्ध उत्तर भारत की रक्षा की और उनको लाहौर से आगे बढ़ने से रोक दिया। उत्तर भारत पर तुर्क आक्रमण के बाद भी भोजपुरी क्षेत्र की सैनिक और राजनीतिक प्रतिभा जागृत रही। शेरशाह सूरी ने सहसराम और जौनपुर के बीच में अपनी सैनिक शक्ति संगठित की और मुगलों को इस तरह खदेड़ा कि हुमायूं को फारस में शरण लेनी पड़ी। साथ ही उसने एक आदर्श शासन–प्रणाली का संगठन किया, जिसके बहुत से अंग आज भी अनुकरणीय हैं। हेमचन्द्र विक्रमादित्य ने पानीपत के मैदान में अकबर की सेना का मुहतोड़ जवाब देकर वीरगति को प्राप्त किया। १८५७ की राजक्रांति में भोजपुर-क्षेत्र सबसे आगे था। वीरवर कुंवरसिंह की कहानी किसको नहीं याद है। स्वतन्त्रता की अन्तिम लड़ाई जो १९४२ में हुई उसमें भी यहीं के वीरों ने आत्मोत्सर्ग किया। यदि भोजपुरी क्षेत्र के लोगों ने उन दिनों ब्रिटिश शासन को न हिला दिया होता तो अंग्रेज इतनी आसानी से भारत छोड़कर न चले जाते।

भाषा, साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में भी भोजपुरी–क्षेत्र की देन अतुलनीय है। वैदिक भाषा और साहित्य का विकास भले ही कुरूपान्चाल प्रदेश में हुआ हो, जब देववाणी लौकिक संस्कृति बनी तो उसका केन्द्र काशी ही रही। संस्कृत व्याकरण के मूल–सूत्र शिव के डमरू–नाद से ही प्रसूत हुए। संस्कृत अध्ययन–अध्यापन की अविच्छिन्न परम्परा काशी में आज तक चली आ रही है। जब संस्कृत ने शुद्ध शास्त्रीय और साहित्यिक बाना पहन लिया तो एक बार देशव्यापी लोकभाषा के विकास का प्रयत्न पालीभाषा के रूप में यहीं से प्रारम्भ हुआ। अशोक के अभिलेख यहीं की प्राकृत में चुनार के प्रस्तर–स्तम्भों पर उत्कीर्ण होकर देश के विभिन्न भागों में पहुंचे। जहां स्तम्भ उपलब्ध न थे वहां स्थानीय पर्वत–शिलाओं पर इसी प्राकृत में उसका शासन अंकित हुआ। यह अखिल भारतीय लोक–भाषा बनाने का सफल महत्वपूर्ण प्रयत्न था। आधुनिक युग में भी जब अखिल भारतीय भाषा विकसित

करने का शुभारम्भ हुआ तो यद्यपि इसका अस्थि–पंजर कुरू–प्रदेश (दिल्ली के आसपास में तैयार) हुआ था तथापि इसमें प्राण और प्रेरणा काशी ने ही फूंका। हिन्दी के निर्माण और विकास में भोजपुरी क्षेत्र की देन अनुपम हैं। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। संस्कृत शिक्षा का केन्द्र काशी प्राचीन काल से चली आयी है। आधुनिक शिक्षाक्षेत्र में भी काशी विश्वविद्यालय के रूप में शिक्षा का अभिनव प्रयास हुआ था, जिसमें भारतीय परम्परा के साथ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के समन्वय का विधान था।

अब प्रश्न हो सकता है कि इस लम्बे इतिहास से भोजपुरी बोली का क्या सम्बन्ध है। उत्तर में निवेदन है कि दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। भोजपुरी बोली में वह चेतना और प्राण है जिससे इस इतिहास का निर्माण हो सका। भारतीय दृष्टि से सबसे बड़ा प्रश्न है अखिल भारतीय जीवन के लिये आवश्यक माध्यमों का विकास करना। इसके लिये चाहिये एक देशव्यापी भाषा, एक उदार और सर्वग्राही–संस्कृति, अखिल भारतीय राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति और उसके लिये सर्वस्व समर्पण करने की कामना। जिस बोली और भाषा में ये तत्व रहेंगे उसी क्षेत्र में इन उच्चादर्शो के लिये उचित भूमि मिलेगी। इसीलिये भोजपुरी के इन बहुमूल्य तत्वों का अन्वेषण, संकलन, संरक्षण और सम्बर्द्धन आवश्यक हैं। भारतीयता को बल तभी तक मिलेगा जब तक ये तत्व जीवित और प्राणवान रहेंगे। ऐसा देखा जा रहा है कि बोलियों के ये तत्व हिन्दी में समवेत और विलीन न होकर विस्मृत और मृत होते जा रहे हैं। अभी तक वे कहीं जीवन्त और कहीं मुमुर्षु हैं। अतः आवश्यक है कि नष्ट होने की प्रक्रिया से उनकी रक्षा की जाय।

ये तत्व प्रायः तीन रूपों में पाये जाते हैं:

(१) गीत, (२) कहानियाँ, (३) लोकोक्तियां।

भोजपुरी संसद की उपयोगिता तभी है जब वह इस ऐतिहासिक कार्य में लग जाय। इस दिशा में प्रथम कार्य है संकलन का। साहित्यिक रूचि के व्यक्ति जब तक विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि केन्द्रों से स्वयं जाकर ग्राम–वृद्धों, पुरूष और महिलाओं, से मिलकर साहित्य–संग्रह नहीं करेंगे, तब तक यह काम सुचारू रूप से न हो सकेगा। कुछ काम हुआ अवश्य है, परन्तु अभी बहुत शेष है। दूसरा काम है सम्पादन का। जो जैसा है वैसा संगृहीत, हो सकता है किन्तु प्रकाशित नहीं। अतः उनके संशोधन में किसी प्रबुद्ध साहित्यिक का हाथ लगना चाहिये। तीसरा कार्य प्रकाशन का हैं। कला और साहित्य का कार्य है जीवन के बहुमूल्य तत्वों को नष्ट होने से बचावें। किसी साहित्य के मुद्रित और प्रकाशित होने से ही उसका संरक्षण संभव है, अन्यथा वह अतीत के गर्भ में डूब जाता है। भोजपुरी में, और अन्य बोलियों में भी, नवनिर्माण का कार्य भी हो सकता है और वह वांछनीय भी है। किन्तु उसका क्षेत्र सीमित हैं। यह क्षेत्र, गीत काव्य, कहानी का ही हो सकता है जिससे जनसाधारण का मनोरंजन हो सके और उनको अपने स्तर पर प्रेरणा मिलती रहे। शास्त्र और विज्ञान बोलियों का क्षेत्र नहीं हैं इसके लिये तो एक परिनिष्ठित भाषा की आवश्यकता होती है और भोजपुरी के लिये हिन्दी ही परिनिष्ठित अखिल भारतीय भाषा है। इन क्षेत्रों में साहित्य–निर्माण से एक स्थानीय समानान्तर जीवन

का प्रवाह निकल पड़ेगा जो अखिल भारतीय जीवनधारा से भेद उत्पन्न करेगा। अतः इस दिशा में जागरूक रहने की आवश्यकता है।

आज देश में भाषा की ज्वलन्त समस्या है जिसकी ओर से भोजपुरी बोलने वाले उदासीन नहीं रह सकते। जिस हिन्दी भाषा के विकास में उनका बहुमूल्य सहयोग है उसका भविष्य कई कारणों से संकट में पड़ गया है। जब तक अखिल भारतीयता और राष्ट्रीयता का देश में जोर था हिन्दी का उत्थान और विकास होता गया और हिन्दी देश के सभी लोगों के लिये मान्य थी। वह इसी बल पर संविधान में देश की राष्ट्रभाषा घोषित हुई थी और आशा यह की जाती थी कि वह अखिल भारतीय एकसूत्रता और राष्ट्रीय व्यवहार का माध्यम बन जायेगी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राजनीतिक मंच से ज्यों–ज्यों संच्चे राष्ट्रीय नेता हटते गये, त्यो त्यों राष्ट्रीय विघटन के लक्षण दिखायी पड़ने लगे। इसके कई कारण थे। कुछ नेताओं में अधकचरी अन्तरार्ष्ट्रीयता की कल्पना, आस्थाहीन व्यक्तियों का राष्ट्रीय जीवन में प्रवेश, पिटीपिटायी लीक पर चलनेवाली नौकरशाही मनोवृत्ति, नौकरियों के बंटवारे के प्रश्न को लेकर आशंका और संघर्ष, स्थानीयता और प्रादेशिकता का पुनरूत्थान, विदेशी शक्तियों का सांस्कृतिक आक्रमण और उसके विविध रूप और केन्द्रीय शासन में सबल व्यक्तित्व और सुनिश्चित नीति का अभाव। हिन्दी की नाव इन समस्याओं के भंवर में पड़ गयी है। मेरे विचार में सम्पूर्ण हिन्दी--क्षेत्र के लोगों का ध्यान इसी समस्या की ओर आकृष्ट होना चाहिये। यदि हिन्दी स्वार्थमय कुचक्रों के कारण अपदस्थ हो गयी तो न हिन्दी ही पनप पायेगी और न स्थानीय बोलियां। छा जायेगा अंग्रेजी का साम्राज्य और हम राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र होकर भी अपने ही देश में विदेशी और वस्तुतः परतन्त्र हो जायेंगे। इसलिये भोजपुरी का प्रश्न स्थानीयता और प्रादेशिकता का नहीं होना चाहिये। हिन्दी के विरोधियों को इससे बल मिलेगा। भोजपुरी का आन्दोलन राष्ट्रभाषा हिन्दी को बल और प्रेरणा देने के लिये ही होना चाहिये। इसका उद्‌देश्य होना चाहिये देशी भाषाओं का स्वातंत्र्य, भारत का सांस्कृतिक स्वातंत्र्य और भारतीय राष्ट्रीयता और अखंडता की रक्षा।

आज भोजपुरी भाषा के इतने प्रेमी, लेखक, कवि और विचारक इकट्‌ठे हुये हैं। आशा करता हूं कि वे भोजपुरी और हिन्दी भाषा के ज्वलन्त प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार करेंगे और उनके उन्न्यन का मार्ग प्रशस्त बनायेंगे। उनके इस अधिवेशन की सफलता की हार्दिक कामना करता हूं।

जेकरे हाथे में देबे के छमता बा ऊ सांस्कृतिक रूप से एतना गिरल बा कि कवि, चिंतक, लेखक के अपेछा कवनो टुच्चा राजनीतिक नेता के महत्व अधिक आंकत बा। – हरि शंकर पारसाई

प्रेम के धारा में घृना बहि जाला – रामकुमार वर्मा

संसार में जेतना प्रकार के पावल बा ओमे सिछा सब से बढ़ि के बा – निराला

का प्रवाह निकल पड़ेगा जो अखिल भारतीय जीवनधारा से भेद उत्पन्न करेगा। अतः इस दिशा में जागरूक रहने की आवश्यकता है।

आज देश में भाषा की ज्वलन्त समस्या है जिसकी ओर से भोजपुरी बोलने वाले उदासीन नहीं रह सकते। जिस हिन्दी भाषा के विकास में उनका बहुमूल्य सहयोग है उसका भविष्य कई कारणों से संकट में पड़ गया है। जब तक अखिल भारतीयता और राष्ट्रीयता का देश में जोर था हिन्दी का उत्थान और विकास होता गया और हिन्दी देश के सभी लोगों के लिये मान्य थी। वह इसी बल पर संविधान में देश की राष्ट्रभाषा घोषित हुई थी और आशा यह की जाती थी कि वह अखिल भारतीय एकसूत्रता और राष्ट्रीय व्यवहार का माध्यम बन जायेगी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राजनीतिक मंच से ज्यों–ज्यों संच्चे राष्ट्रीय नेता हटते गये, त्यो त्यों राष्ट्रीय विघटन के लक्षण दिखायी पड़ने लगे। इसके कई कारण थे। कुछ नेताओं में अधकचरी अन्तरार्ष्ट्रीयता की कल्पना, आस्थाहीन व्यक्तियों का राष्ट्रीय जीवन में प्रवेश, पिटीपिटायी लीक पर चलनेवाली नौकरशाही मनोवृत्ति, नौकरियों के बंटवारे के प्रश्न को लेकर आशंका और संघर्ष, स्थानीयता और प्रादेशिकता का पुनरूत्थान, विदेशी शक्तियों का सांस्कृतिक आक्रमण और उसके विविध रूप और केन्द्रीय शासन में सबल व्यक्तित्व और सुनिश्चित नीति का अभाव। हिन्दी की नाव इन समस्याओं के भंवर में पड़ गयी है। मेरे विचार में सम्पूर्ण हिन्दी–क्षेत्र के लोगों का ध्यान इसी समस्या की ओर आकृष्ट होना चाहिये। यदि हिन्दी स्वार्थमय कुचक्रों के कारण अपदस्थ हो गयी तो न हिन्दी ही पनप पायेगी और न स्थानीय बोलियां। छा जायेगा अंग्रेजी का साम्राज्य और हम राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र होकर भी अपने ही देश में विदेशी और वस्तुतः परतन्त्र हो जायेंगे। इसलिये भोजपुरी का प्रश्न स्थानीयता और प्रादेशिकता का नहीं होना चाहिये। हिन्दी के विरोधियों को इससे बल मिलेगा। भोजपुरी का आन्दोलन राष्ट्रभाषा हिन्दी को बल और प्रेरणा देने के लिये ही होना चाहिये। इसका उद्देश्य होना चाहिये देशी भाषाओं का स्वातंत्र्य, भारत का सांस्कृतिक स्वातंत्र्य और भारतीय राष्ट्रीयता और अखंडता की रक्षा।

आज भोजपुरी भाषा के इतने प्रेमी, लेखक, कवि और विचारक इकट्ठे हुये हैं। आशा करता हूं कि वे भोजपुरी और हिन्दी भाषा के ज्वलन्त प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार करेंगे और उनके उन्न्यन का मार्ग प्रशस्त बनायेंगे। उनके इस अधिवेशन की सफलता की हार्दिक कामना करता हूं।

जेकरे हाथे में देबे के छमता बा ऊ सांस्कृतिक रूप से एतना गिरल बा कि कवि, चिंतक, लेखक के अपेछा कवनो टुच्चा राजनीतिक नेता के महत्व अधिक आंकत बा। – हरि शंकर पारसाई

प्रेम के धारा में घृना बहि जाला – रामकुमार वर्मा

संसार में जेतना प्रकार के पावल बा ओमे सिछा सब से बढ़ि के बा – निराला

१०. धूब	धूप	धूप	धूब, धूप
११. पिहाण	पिधानं	ढ़कना	पिहान, पेहान
१२. पुत्र	पुत्र	बेटा	पुत्त, पुत्तर
१३. बासर	वासर	दिन	बासर
१४. बिडवा	विटप	पेंड	बिरवा, फेंड
१५. बिसहर	विषधर	सांप	विसहर
१६. बेल	बेला	समय	बेला, बेरा
१७. महतो	महान	बडे लोग	महतो
१८. मउस्सिआ	मातृष्वसा	मौसी	मउस्सिआ, मउसी
१६. संझा	संध्या	सांझ	संझा, सांझ
२०. ससुरो	श्वसुर	ससुर	ससुर, ससुरा
२१. सडिआ	शाटिका	साड़ी	सड़िआ, साड़ी
२२. सुत्ती	शुक्ति	सीप	सुतही
२३. हत्थे	हस्ते	हाथ	हत्थे, हाथे

मलकौली मंदिर
बगहा–२, प. चम्पारन

प्रेरक प्रसंग

महाकवि माघ

संस्कृत के महाकवि माघ एक दिन अपनी ओसरा में बइठ के अपने काव्य के नवम सर्ग लिखत रहलें, तबे अवंतिका से एगो दरिद्र बाभन आके उनका से अपनी बेटी के बियाह खातिर रुपया–पइसा के मदत मंगलें। कविवर माघ खुदे तबाही में रहलें। चारो ओर घर में नजर दउरवलें कि कौनो कीमती चीज होखे त बाभन देवता के दे दीं।

एगो खटिया पर अपने परानी के सूतल देख लें जेकरे हाथे में सोना के मोट–मोट रत्न जडल कंगना रहे। माघ उन करे हाथ से धीरे से एगो कंगना निकाल के चले के चहलें कि घरनी के आंख खुल गइल। उन का सगरे बात के भेद समझत देर ना लागल।

ऊ अपने दोसरा हाथ के कंगना उतार के कवि जी के हाथ में खुसी से देत कहली–'स्वामी जी, निर्धन बाभन के काम एगो कंगना से ना चली। हमार बिनती बा कि दूनो कंगना परसन्न होके दे दीं।'

संत अब्दुल्ला

एक दिन संत अब्दुल्ला कपडा खरीदे बदे बाजार अपने बेटा के साथे गइलें। दोकानदार कपडा देखवलस। संत कुछू दाम कम करावे के चहलन, बाकिर बनिया अड गइल। दोकानदार के पडोसी उन के पहिचानत रहे, ऊ बोलल–'जानत नइख कि ई के ह ? अब्दुल्ला हवें।'

संत अब्दुल्ला ई सुनते उठ के खडा हो गइलें आ अपने बेटा हाथ पकड के कहलें–'मियां, इहां से चल। हम पइसा से कपडा खरीदे आइल बानी, अपने गरीबी से ना।'

एडिसन

एगो औरत एक बार अविष्कारक एडिसन के आगे कागज के टुकडा बढ़ा के कहलस–'हमरे बेटा खातिन कवनो नसीहत लिख दीं।' एडिसन तुरत लिख दिहलें–

'काम के समय कवो घडी मत देखीं'

प्रो. शिब्बन लाल सकसेना

जेकरे नस नस में छर्रा दउडत रहे

—पाण्डेय आशुतोष

ई बात सन् ५३ के आसपास के हवे। ओ। घरी हम डी. ए. बी. नारंग इंटर कॉलेज, घुघली के छात्र रहनी। रेलवे स्टेशन के पास चौबे जी के मकान में एगो कमरा किराया पर ले ले रहनीं। स्टेशन के नीचे पांडे जी के छोट मुकि टुटपुंजिया होटल रहे जवना में दूनो टैम भोजन—छाजन होखे। पंडित जिउआ मरिचा आ लहसुन के 'रगडा' अइसन चोख बनावे कि खइले के चार घंटा बादो ले मुंह भभात रहे।

ओही होटल में रात बिरात हम आके खाना खाईं। पांडे जी गर्मी में त नाहीं,बाकिर जडवा में कुनमुनाये लागें।

एक बेर घूम घाम के हम कहीं से अइनी त देख तानी कि मुहें पर ले घनघोर मोंछ लटकल आ बाल लटिआइल, फाटल गरम कोट मरदानी के ऊपर पहिरले एगो मोट झोंट आदमी निखरहरे खटिया पर बइठल बा आ टिसन मास्टर से लेके अउरी कई मनई आसपास घुरिअवले बाडें। सगरे लोग 'प्रोफेसर साहेब' 'प्रोफेसर साहेब' कइले बा। ओह मनई के रंग रूप देख के हमरा हंसी आवे कि ई त चपरासियो लायक नइखे, 'प्रोफेसर' का होई? बडी देर रात ले बतकही चलल। खाये के बेरा पांडे जी अपने होटल से दू ईंच ऊंच बारी वाली थरिया में लउकी के तरकारी आ भात 'प्रोफेसर साहेब' के आगे परोसि के धइ दिहलें। ऊपर से सौ ग्राम ले 'रगरा' भी रहे। प्रोफेसर साहेब हापुच—हापुच तरकारी—भात सहोति लेहलें। दोहरावन के नाम पर 'रगरा' लेहलें। मरिचा के तिताई से ना त एको बार सी कइलें ना एको बार उनके आंख लोराइल।

दोसरा दिने पंडित जी बतवलें कि उहे नू विद्रोही प्रो. शिब्बन लाल सक्सेना रहलें। ई परिचय सुनि के हम बडा पछतइनी।

बाद में कई बार ट्रेन से आवत—जात सक्सेना जी के साथे उठे बइठे के मौका मिलल। सभे के मालूम रहे कि उन के बायां टांग में बन्दूख के पचासन छर्रा आजीवन दउडत रहेला। हम टो के देखले रहनी।

स्वतंत्रता संग्राम के एह अजेय सिपाही प्रो. शिब्बन लाल सकसेना के जनम १३ जून १९०७ ई. के उत्तर प्रदेश के बरेली जनपद के आंवला तहसील में भइल। गांव के नांव रहे बलिमा। श्री ठोरे लाल सक्सेना अउर बिट्टी रानी इनके बाबूजी आ माई रहली। बाप के मरले पर विधवा माई बालक सक्सेना के लेके अपने भाई के लगे कानपुर चलि अइली। जब सक्सेना जी इस्कूली में रहलें, ओही घरी लरिकइयें से देश के आजादी में रूचि लेवे लागल रहलें।

पहिले बेरि जालियांवाला बाग कांड में कानपुर बन्द करावत में अपने सहपाठिन के साथे गिरिफ्तार भइलें। छुटलें के बाद प्रथम श्रेणी से बी. ए., एम. ए. (गणित) एम. ए. (दर्शन शास्त्र) पास कइ लिहलें। १९३० ई. में गोरखपुर के नामी कॉलेज सेंट एन्ड्रयूज में प्रवक्ता के पद पर बहाली भइल बाकिर नोकरी में इन कर मन ना लागल। स्वतंत्रता देवी के पुजारी बाबू सक्सेना महात्मा गांधी जी के आवाहन पर नोकरी के परनाम करि के १९३१ ई. में महराजगंज में रमे लगलें। जब नमक आदोलन में भाग लेवे सक्सेना जी १९३० मे गइलें तबे से महराजगंज के पिछडापन के खेयाल उन करे मन में घर कइले रहे।

१९३१ ई. में सक्सेना जी ईख संघ के स्थापना कइलें जवन महराजगंज के कर्मभूमि पर एह हठयोगी के पहिला रचनात्मक आ संगठनात्म काम रहे। एक दिन अइसन भी आइल जब गांधी जी जिला कार्यालय बांसपार (महाराजगंज)

के कार्यभार सक्सेना जी के हाथे सौंप दिहलें जहां से स्वतंत्रता आंदोलन के संचालन होत रहे।

सक्सेना जी अब जमींदारन के खिलाफ गांव–गांव में घूमि घूमि के संगठन खडा कई दिहलें। इहां के किसानन आ मजदूरन के सोसन जमींदार लोगन के हाथे भयंकर रूप से होत रहे।

सक्सेना जी से अब अग्रेजन के साथे जमींदार लोग भी खार खाये लागल। सन ४२ में अंग्रेजन के खुफिया पुलिस आ मुखबिर बनल जमींदार इन के पकडे के फिराक में पडि गइलें। ई स्वतंत्रता के संक्रान्ति काल रहे।

२६ अगस्त ४२ ई० के आपन क्रान्तिकारी संगठन के सक्रिय करे खातिर श्री सक्सेना विसुनपुर गबडुआ गांव मे बइठक करे वालॉ रहलन। तबे उन का संदेह हो गइल। ऊ रतिये में जंगल परासखांड चलि गइले। एह गांव में सक्सेना जी के आवे के सूचना जब हरपुर महन्त के मिलल तब २७ अगस्त के पुलिस के साथे लेके भिनहियें गांव घेर लिहलन। खूब गोली चलल। एह में क्रांतिकारी सुखराज अउर झिनकू मारल गइलें। एगो बागी योद्धा कासीनाथ अस्पताल में दम तुडि दिहलें। इहां से दस क्रांतिकारी वीरन के गिरिफ्तारी भइल। बाद में वोह जमीन पर एगो सहीद स्मारक बनावल गइल।

सक्सेना जी पर धइल २५००/रू. के इनाम आ अंग्रेजन से साबासी लेबे खातिर ६ सितम्बर ४२ के एगो बडकवा शिवसागर दुबे गोली मार के सक्सेना जी के घाही करि दिहलें आ पकड लिहलें।

ई खबर आगि के अइसन महराजगंज जवार में फइल गइल। हरपुर के महन्त के पास ई खबर पहुंचले पर ऊ कारिन्दा भेजि के दुबे के मरवा के सक्सेना के अपने कब्जा में ले लिहले आ गोरखपुर के कलट्टर मास के सौंपि दिहले।

केश चलल। २६ माह के सजा फांसी के कोठरी में सक्सेना जी के बितावल पडल रहलें। जब पं. जवाहर लाल नेहरू प्रिवी काउन्सिल में उन के जेल यातना के प्रकरण उठवले तब रिहाई भइल।

एह वीर सेनानी के तरह–तरह के जातना भी तनिको तुडि ना सकल।

बरेली के धरती पर जनमल प्रो. शिब्बन लाल सक्सेना अइसन सपूत के पाके महराजगंज के धरती धन्न धन्न हो गइल।

इहे महराजगंज तेरह बरिस ले विधान सभा/विधान परिषद आ तेइस बरिस ले लोक सभा के सदस्य उन का के बना के उन कर सेवा के पुरस्कार दिहलस। महराजगंज जनपद में जवन पहिला शिक्षा मंदिर गणेश शंकर विद्यार्थी स्मारक कॉलेज बनल, ऊ सक्सेना जी के यशस्तम्भ हवे। आज जवन भी उत्थान आ सामाजिक संस्थान देखाई पडत बा–सब के नींव में वोह क्रान्तिकारी के सपना बा।

ई दुनियां नश्वर बा। इहां आपन काम करीं, फेरू अपने घरे लौट जाईं। २० अक्टूबर ८५ ई. के ई महापथिक अपने अनन्त यात्रा पर निकल पडल।

आज ओकरे इयाद में बनल निचलौल–सिसवारोड पर 'प्रो. शिब्बन लाल सक्सेना कॉलेज' में गाय–गोरू हिरत बाडें। न जनता के कवनो दुःख बा, ना ये जवार के नेता चाहे विधायक के एह दुर्दसा के धेयान बा। महाराजगंज जिला के अगिली पीढी जब प्रश्न करी तब जवाब ना जूरी।

भारत वर्ष अइसन देश बा जहां देशभक्त के खून से मंत्री लोग के पसीना कीमती होला।

"चमन पै वक्त पडा, बढ़ के हमने खून दिया !
बहार आइ तो कहते हैं- तेरा काम नहीं !!"

बन्दे मातरम् बन्दे जननी !!

मलकौली मंदिर
बगहा – २
प. चम्पारण– ८४५१०५

"बदलल गाँव गिरावँ,,

—विमलेश कुमार चतुर्वेदी 'विमल'

बदलल गाँव गिराँव, हो मितवा!
बदलल गाँव गिराँव!उलटल परल....
उलटल परल रेत मा नाव।।
उड़िगै मोर पपिहरा कोइलरि,
उड़िगै सोन चिरइया।
चार महीना बाद दिखाई
आज परल गौरइया।
दुढ़य बयाँ ताड बंसवरिया,
जुगनू पीपल छाँव! उलटल परल...
साँवा, कोदौ, काकुन, गायब
भा गरीब कै दाना।
घुरवा पर कै गेहुंवा देखा
कइसन चलै उताना।
खूंटा बंधल भंइसिया हेरै,
नदिया, नार, तलाव! उलटल परल....
एक समय मिलि गारैं अमावट—
दादी, अम्मा, काकी।
एक आम के बदे लड़ै अब—
राजू, राहुल, राकी।
पुरवा गरमा—गरम चलै, औ'
चलै ठंड पछियांव! उलटल परल....
गांव रहल खुशहाल जउन वैह।
बुझल नेह कै बाती।
लड़त बाप से पूत, घना से—
ससुर, धिया से नाती
बदलल गउंवा केर पिरितिया,
दंगल भयल चुनाव! उलटल परल....

'कल्प कुटीर'
२५४६, शिवपुरी, सुलतानपुर (उ.प्र.)

❑आदमी के तीन प्रकार- एक इंजिन, दूसरा गाड़ी, तीसरा ब्रेक- उपेन्द्र नाथ अस्क

❑थोड़ा पढ़ल अउर अधिक सोचल, कम बोलल अउर अधिक सुनल, इहे बुद्धिमान बने के उपाय हवे- रविन्द्र नाथ ठाकुर

गीत

—पी. चन्द्र विनोद

भटक गइल मन कतहीं सपनन के गाँव में।
ममता के गलियन में सुधियन के छाँव में।
मरुथल में मिरगा बा कस्तूरी मातल
जीतल पथ हार गइल, बाकी पथ तातल
अन्हियारी अन्तर में, रोशनी उदाँव में।
ममता के गलियन में सुधियन के छाँव में।
हांफत छन ठहर गइल, बन्द पड़ल साँकल
पुरुआ के झोंका में चुम्बन के टाँकल
दर्द भरल गीतन में, मर्म झरल भाव में।
ममता के गलियन में सुधियन के छाँव में।
असरा के अँगना में लोभ, मोह, माया
छन भर में लूट गइल कंचन के काया
आँखिन के हरसिंगार झहर गइल ठाँव में।
ममता के गलियन में सुधियन के छाँव में।
लपिटाले साँपिन सनेह बूझ चन्दन
खूसट सेमर के तन पीछे बा क्रन्दन
मह मह मह फूल लदल काँटन के नाव में।
ममता के गलियन में सुधियन के छाँव में।

न्यू एफ-२, हैदराबाद कालोनी,
बी. एच. यू. परिसर, वाराणसी-५

सेर साह के इंसाफ

सेर साह सूरी के वली अहद (युवराज) हाथी पर बइठ के आगरा के सड़क से कवनो ओर घूमे जात रहें कि एगो गैर मूस्लिम (हिन्दू) मोदी के दोकान सामने पडल। वली अहद दोकान पर बइठल मोदी के मेहरी पर दूगो पान के बीडा फेंक के आगे बढि गइलन।

सब कुछ मोदी देखलस, मगर डर के मारे चुप रहल। कुछ पडोसी मुसलमानन के कहले पर मोदी साहंसाह के दरबार में फरियाद कर दिहलस। गवाही गुजरले के बाद बादसाह वली अहद के बीबी के भरल दरबार में बोला के मोदी के दू बीडा पान देके कहलन — ल, तूहूं ई बीडा युवराज के बीबी पर फेंक द, ताकि वो बेवकूफ साहजादा के मालूम हो जाय कि हिन्दू के गरीब से गरीब बहू—बेटी के छेडे के का नतीजा होला।

—अब्बुस सखनी: 'तवारिखे अफगान' से

राहुल सांकृत्यायन के भोजपुरी सेवा

—जीतेन्द्र वर्मा

राहुल सांकृत्यायन जइसन विश्वविख्यात विद्वान के भोजपुरी सेवा कई अर्थ में महत्वपूर्ण आ ऐतिहासिक बा। राहुल जी जन साधारण से जुड़ल आदमी रही, ऐही से उहां के जनभाषा के महत्व बूझनी आ ओकरा के अपनवनी। उहां के एह भय से भयभीत ना भइनी जे भोजपुरी में बोलला आ लिखला से महत्व कम होई। जवना बेरा राहुल जी भोजपुरी में साहित्य सिरिजना कइली ओह बेरा भोजपुरी एगो बोली मात्र रहे—अबही एकर भाषाई स्वरूप स्थापित ना भइल रहे। एकरा विपरीत ओह घड़ी ले राहुल जी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विद्वान का रूप में प्रसिद्ध हो चुकल रहनी।

"तू कहता कागद का लेखी" "मै कहता अंखियन का देखी—" कबीर के एह उक्ति के उहां के अपना जीवन में उतरनी। अंखियन का देखी कहे के अदम्य इच्छा उहां के घुमक्कड़ बनवलख। उहां के शहर देहात, देश विदेश घूम के ज़न साधारण के स्थिति देखनी आ ओकर पीड़ा बूझनी। अंखियन का देखी कहला का वजह से उहां के विचार आउर लोग से हट के बनल। उहां के भाषाई विचारों अंखियन का देखी यानी अनुभव पर आधारित रहे। उहां के आपन भाषाई विचार स्पष्ट करत अपना किताब 'मेरे असहयोग के साथी' में लिखने बानी—

"मैं छपरा जिले में हमेशा वहां की बोली—भोजपुरी—में ही भाषण देता था। सोचता था हिन्दी में बोलने से आधा—तिहाई ही लोगों के पल्ले पड़ता है फिर क्यों न उस भाषा का सहारा लिया जाये, जिसमें सोलहों आना पल्ले पड़े।"

बहुमुखी प्रतिभा के धनी राहुल जी के इहे भाषाई दृष्टिकोण उहां बहुभाषी बनवलस। उहां के हिन्दी, भोजपुरी, संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, सिहली, तिब्बती आ अंग्रेजी धाराप्रवाह बोली आ लिखी। एकरा अलावा रूसी, चीनी, फ्रेंच, अरबी, फारसी, बंगला सहित कईगो भाषा पढ़ आ बूझ ली। जनसाधारण के काफी निचका से देखला का वजह से उहां के ई बात खूब बढ़िया तरे बूझ गईल रहनी जे जनभाषा में बोलले पर सभे बात बूझ सकता।

राहुल जी के जन्म ६ अप्रैल १८९३ के उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिलान्तर्गत पन्दाहा नाम के गांव में भइल रहे जवन भोजपुरी भाषी जिला हवे। यद्यपि राहुल जी के कर्मभूमि पूरनका सारन जिला (सम्प्रति, सीवान, छपरा, गोपालगंज) बनल। एहीजा के भोजपुरी में उहां के साहित्य रचना कइनी उहां के भोजपुरी में आठ गो छोट—छोट नाटक लिखले बानी। उन्हनीन के नाम बा—मेहरारून के दुरदसा, नइकी दुनिया, जोंक, ढुनमुन नेता, ई हमार लड़ाई ह, देश रक्षक, जरमनवा के हार निहचय, आ जपनिया राछछ। दूसरका विश्वयुद्ध का बेरा लिखल आठो नाटक में कम—बेस साम्यवाद के प्रचार आ बड़ाई कइल बा। उहां के भोजपुरी में लिखल 'वाणभट्ट औ राजा हरख के भेंट' शीर्षक निबन्ध आरा से डां. रघुवंश नारायण का संपादन में निकले वाली पत्रिका 'भोजपुरी' में छपल बा। उहां के बेहिचिक भोजपुरी में पत्राचार करी जवन भोजपुरी पत्र सहित्य के अनमोल थाती बा।

भारतीय समाज में नारी के निरीह स्थिति केहू से छूपल नइखे। राहुल जी के लिखल 'मेहरारून के दुरदसा' नारी के दयनीय हालत का ओर समाज के ध्यान खीचता। ई सामाजिक नाटक हवें। चार अंक में बंटल एह नाटक में आठ गो खेलाड़ी (पात्र) बाड़े। एह में लिंग भेद, परदा प्रथा, सत्ती प्रथा आदि कुरीतियन पर कड़ा प्रहार कइल बा।

चार अंक में बटल 'नइकी दुनिया' नाटक में बारह गो खेलाड़ी बाड़े। एह नाटक में तेजी से बदलत समय का प्रभाव से ढ़हत पुरान मान्यता के स्वाभाविक चित्र उरेहाइल बा। एह में राहुल जी जात–पात के संकीर्ण बन्धन तूड़े के प्रेरणा देत देखवले बानी के पूरनका दुनियां से नयका दुनियां नीमन बा। उहां के सभ नाटकन में अपना समकालीन घटत घटना पर आम आदमी के कर्तव्यबोध करवले बानी।

उहां के नाटकन में यर्थाथ आ आदर्श के सुन्दर समन्वय भइल बा। प्रायः यर्थाथ कटु आ आदर्श सुखद होला। नइकी दुनियां में उहां के ई देखवले बानी कि पूरनका समय में जवना घर में अंडा खाइल महापाप बूझल जात रहे ओही घर में नवका समय में दोसरा जाति में बेटी–रोटी के सम्बन्ध कायम होता। पूरनका समय में जवना बूढ़ मेहरारू के काम रोज नया–नया गारी बनाके गांव भर के बात–बेबात पर गरियावल रहल हा, नवका दुनिया में ऊ मेहरारू पढ़त लिखत बिया।

जातिगत ऊँच–नीच के भेदभाव कई सदी से चलल चल आवता। छुआछूत हिंदू समाज खातिर अभिशाप साबित भइल बाकिर कुछ लोग एकरा के वरदान बूझता। समाज में व्याप्त ऊँच–नीच के अमानवीय भावना का विरोध में लिखल नइकी दुनियां समकालीन परिवेश में प्रासंगिक बा।

पानी में रहनेवाला जोंक के सभे जानता। राहुल जी अपना 'जोंक' नामक नाटक में बेईमान सेठ–महाजन–उद्योगपति आ पांखडी साधु महात्मा के समाज के जोंक का रूप में चित्रित कइले बानी। चार अंक में लिखल एह नाटक में उन्नइस गो खेलाड़ी बाड़े।

गरीब मजदूर किसान के खून समाज के जोंक केंगन चूसतारे एकर यर्थार्थ रूप प्रस्तुत कइला का संगे एह में किसान मजदूर के संघर्ष के सलाह देले बानी। धरम का ओट में समाज में एक–से बढ़ के एक कुकरम हो रहल बा। एक कावर मेहनत मंजूरी करे वाला के ओकर उचित मजदूरी नइखें मिलत उ खइला बेगर मूअता त दूसरा ओर निट्ठला बइठल रहेवाला पाखंडी साधु महात्मा मउज मस्ती के जीवन जियतारे। जोंक नाटक में एह व्यवस्था पर प्रहार कइल बा।

राहुलजी देश के रखवाली करेवाला सैनिक के मूल कथानक बनाके देश रक्षक नाटक लिखले बानी। उहां के वामपंथी विचारधारा के अनुयायी रहीं। एही से द्वितीय विश्वयुद्ध में सोवियत संघ का विरोध में लड़ेवाला देश जापान, जर्मनी के आलोचना अपना नाटकन में कइले बानी आ जापान, जर्मनी का विरोध मे लड़े खातिर भारतीय लोगन के अंगरेजी फौज में भरती होखे खातिर प्रेरित कइले बानी। 'ई हमार लड़ाई ह' द्वितीय विश्वयुद्ध के कथानक पर लिखाइल बा। द्वितीय विश्वयुद्ध का बेरा लिखल 'जरमनवा के हार निहचय' नाटक में उहां के लड़ाई में जर्मनी के पराजित देखवले बानी जवन बाद में सांच भइल। 'जपनिया राछछ' नाटक में द्वितीय विश्वयुद्ध का बेरा चीन आ कोरिया में जापान के कइल कथित अत्याचार के चित्र उरेहाइल बा। दलबदलू नेतन के ऊपर लिखल ढुनमुन नेता आजो टटका बा।

'देश रक्षक, ई हमार लड़ाई ह, जरमनवा के हार निहचय, जपनिया राछछ राहुल

जी अपना समकालीन घटना विशेष पर लिखले बानी। मेहरारून के दुरदसा, नइकी दुनिया, जोंक आ दुनमुन नेता आज के परिवेश में प्रासंगिक बा। उहां के नाटकन में रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास आ पांखडपूर्ण धार्मिक मान्यता पर कड़ा चोट आ प्रगतिशील विचार के स्थापना भइल बा। नाटकन के संवाद बड़ा चोख बाड़े सअ। संवाद खेलाड़ी के अनुकूल बा आ सीधा–साधा ढंग से कहल जाता। संवाद में मुहावरा आ गांव–गंवई में प्रचलित भोजपुरी शब्द के स्वभाविक रूप से प्रयोग भइल बा जवना का करते नाटक रोचक बन पड़ल बा।

राहुल जी सारन जिला के भोजपुरी में साहित्य–सृजन कइनी। उहां के विचार रहे कि आम जनता शब्द के जवना रूप में उच्चारण करेले ओही रूप में शब्द लिखाए के चाही। एही से उहां के भाषा का जगे 'भाखा' शोक का जगे 'सोग' मजदूर का जगे 'मंजूर' हिंदी का जगे हिनूई आदि के प्रयोग कइले बानी। यद्यपि अइसे कइला से भोजपुरी के मानक स्वरूप बनावे में कठिनाई होई।

राहुल जी के नाटकन में जगे–जगे गीत दिहला बा जवन नाटक के भावानुकूल वातावरण सिरजे में सहायक बा। उहां विचार मानवतावादी रहे। मरद–मेहरारू के बराबर अधिकार के पक्षधर राहुल जी के ई देख दुख भइल कि समाज में लड़की क जन्म अमंगलकारी मानल जाला। एही मान्यता पर चोट करत राहुल जी लिखनी–

"एके माई बपवा के एक ही ओदरवा से
दूनो के जनमवां भइल, रे पुरूखवा
पूत के जनमवां में नाच आ सोहर होला
बेटि के जनम पर सोग, रे पुरूखवा"

आमतौर पर मेहरारू के अबला कहल जाला। अबला से जनम लेवे वाला मरद भला बलवान केंगन हो सकता। एह पर मेहरारू के पीड़ा राहुल जी के गीत में देखी।

"दुधवा के पी पहलवनंवा बनल जे,
सेही कहे हमरा के अबलवा।।
जिभिओ चलवै औ हथवो चलावै,
से देखि के हंसै लागै महलवा।
राजौ धरमवौ में मरदै के चलती,
हमार नहीं केहू मानै कहलवा।
ढोल औ पसू समतुलवा जे भइनी
इहवां खसूर हमनी के दबल बा।"

सन् १६४७ में आयोजित अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गोपालगंज (द्वितीय) अधिवेशन के उहां के अध्यक्षता कइनी। एकर ऐतिहासिक महत्व बा। अध्यक्ष पद से उहां के जवन भाषण दिहनी उ भोजपुरी भाषा, साहित्य आ आन्दोलन खातिर शिलालेख बन गइल।

राहुल जी के हिंदी किताबन में भोजपुरी शब्द आ टोन आसानी से मिल जाला। उहां के चर्चित पुस्तक 'भागो नहीं दुनियां को बदलो' में क्रिया पद छोड़ के शेष वाक्य भोजपुरी में बा।

राहुल जी के भोजपुरी साहित्य के ऐतिहासिक महत्व बा।

वर्मा ट्रांन्सपोर्ट
राजेन्द्र पथ
सीवान–८४१२२६

अनुवाद

हाइकु : सिल्प

(डा.) आदित्य प्रताप सिंह

हाइकु लिखे के कवनो आगे तय सांचा ना बा। ऊ नजरो हवे आ नजारा भी। ओकर कइयोगो लय आ तुक हो सकेला, कइगो बिनाई भी। कहीं अपने खुद से बात, कतहूं सम्माद, कही इसारा–सुझाव, कतहूं कथा सैली, कही विरोधी बिम्ब/ परतीक, कही एगो बिम्बभंगी, अकस कहीं अनुवाद त कहीं एगो हाव अउर कतहूं एकठे संचारी के अलम्ब लेके ऊ आपन अरथ गुंजा जाला। ५ – ७ – ५ के वर्णक्रम अकसर ऊपरौटा विन्यास ह।बेहद सहज, लेकिन भितरिया विन्यास कठिनाई मिलल मरम सहजता के ढेर होला। हिन्दी में अकसर एके वाक्यी चाहे वाक्यांसी हाइकु भेंटा जाला। डा. भगवत सरन अगरवाल के ईहां तीन वाक्यी हाइकु ठवां ठाई मिलि जाला जइसे – जबे मिल ल/ कहे के कुछ रहे/कहनी कुछो। तीन क्रियान्ती– उर्मिला कौल अउर डा. सुधा गुप्ता के इहंवो मिलिये जाला।

हाइकु के 'वर्कशॉप' नाहीं होइ सकेला। खुलल प्रकृति, पूरा समाज, सगरो दुनियां एक डेरा हवे। एकर कवनो पुरान तंग खेमा–खूंटा ना बा। हाइकु अकसर क्रिया प्रधान अउर क्रियाहीन दू रूप में पावल जाला। हाइकु जापानी में 'हीबान' अउर हिन्दी में गद्यवान कहाला। परमान खातिन, क्रियाहीन (हीवान) – नया कलम/गोबर के मुकुट/फूली गुलाब। एकला क्रियांती– दूबि के पत्ती/निदारी ओस बूंन/ चिरई पी ले। दू क्रियांती– चलु छंद आ/ हिटलर के हतीं। चिरई गावें/ ढेर क्रियांती –मोजरि, कूंक/ फूली, महक गूंज/ केहू दहके।

(१) हमनी जानत बानी जा कि हाइकु में 'ढ़ाक के तीन पात' जइसन तीने गो चरन होला, चाहे ऊ अक्रिय होखे चाहे सक्रिय। तीनो चरन मिल के चौथा अर्थ चित्र भा ध्वनि गूंज भा चित्रेतना पैदा कइल जाला– अणु स्फुरना

(२) ई धेयान राखे के चाही कि पदांस के आखिर विभक्ति से मत होखे (न, का, से वगैरे)

(३) हाइकु में लुप्तोप्मा के छिपल रूपक रहेला जइसे सांप अइसन धुंआ भा 'सर्प धूम' टेंढ धुंआ ना होके सांप जइसन टेढ धुंआ माने विसेसन के संघे चित्रेतना रखल जाला। सगरे नभ/चीरत उडि गैल/ एगो चिरई– अइसन ना लिखि के – सगरे नभ/ उडि गैल चीरत/ नन्की चिरई। कहीं कही एगो क्रियांती सबद देहरी दीप (संजोजक) हो जालाः सांझ अगोर/ मर्म जरत चाम /तारा गोदना। जरत चउकढ़ की दीया (देहरीदीपक) बनि गइल बा। गोदना संज्ञा भी बा आ गोद ना– गोद मत, एक त चाम जरते बाटे ऊपर से तारा के गोदल, कहां के नयाव हवे? कबो कबो हाइकु के हरेक सब्द प्रतिकात्मक बिम्ब होला जइसे– चन्दन, दाढ़ी/ नांव में चलि परै/ घुंघट– टाई/ इहां चन्दन – हिन्दू,

दाढ़ी– मुसलमान, नाव–

आपन संविधान, घुंघट– दुलहिन, टाई– ईसाई, सजी मिलि के अपन भारत के संस्किरती के पहिचान बन रहल बा। अब एगो संवादात्मक हाइकु देखीं– देखल कहीं/ किनार बिनु नदी/ हां रे, कविता। विप्सामूलक के मिसाल देखीं– प्लोटो के राजा/ ताज उठा आपन/होमर आवे। प्लेटो कवि के हटा के दारसनिक राजा के गद्दी दिहलन। हाइकु कहत बा– ताज उठाल, होमर के ताजीम द, अगर तमीज

होखे त। अल्हा के लोक सैली देखीं– झूकि खलासी/घन–तोपन–बत्ती/अरर. ..धम्म (झुके खलासी दोनों दल में, तोपन बत्ती दई लगाय) कबो तीनों चरन के तुक मिलि जाला, कबो दू के, कबो एको ना मिले। लेकिन भितरिया लय होला। भाव, विचार, भाखा के केतना रंग आ कईगो अरथ गूंजे लागे। एतना अउर अइसन गुंजाइस गायत्री, ककूप, दोहा, सोरठा, गजल, रूबाई, सॉनेट में ना होखे।

जापानी हाइकु 'नाटम' (सेल्फ नोटिंग) के ओर माने हाराकीरि (आत्महत्या) के बडाई करेला।

हाइकु आतम परचार चाहे आतम हनन–दूनो ना करे। अतमा के अंतर निहित करे। हाइकु के पैरोडी 'सिनेरियु' में झांके ला। हाइकु के कई किसिम होखे। ई हाइकु लिखे वालन के भाखा बल के उपर बा।

१. मानवीकरन– कुहा बा दूर/घुमावदार सीढ़ी/चढ़त धाम।

२. आतंरिक लय– कांपत जाडा/दीया लगे सटल/मूस के बच्चा।

३. दीर्घ अछरांत– दउडे तब/पांख खोलिके उडे/सा रस धावे।

४. मध्य अनुप्रासी– धन बर्फ ह/पांव पांख पहिया/जमूद सभे।

५. विरोधी क्रियांती– हिनहिनात/रन भुई रहली/अब भिनभिनात।

६. चित्रांसी– ऊंट आ भेंड/दूर छितिज लगे/जुडल मेघ।

७. प्रस्न सूचक– फडफडा ल/हमरे खिडिकिया/अबो का तू हूं?।

८. नाटकीय– आहट होते/गाले पीला तमाल/द्वन्द्व सुरू।

९. मुक्त छंदिक– घर के माछी/पहुंचे चारों ओर/पैरबी का रे।

('हइकु–भारती'– अहमदाबाद (सम्पा. डा. भगवत सरन अग्रवाल) से भोजपुरी में सुश्री. प्रज्ञा पारमिता अनुदित कइली।)

ब्राहमन केह?

"न चाहं ब्राहमणं ब्रूमि, यो निजं मत्ति सम्भवम्। अकिंचनं, अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राहमणम्"

अर्थात- माता और जोनी से पैदा भइले से हम केहू के ब्राहमन ना कही ले। जे थोड़ा भी लेबे के इच्छा ना राखे, हम ओकरे के ब्राहमन कही ले।

-धम्मपद- ३८८

आरोग्य परमा लाभा, सन्तुठ्ठी परम धनम्।
विस्सास परमाञ्ञाती, निब्बाणं परमं सुखम्।।

अर्थात-निरोग रहल सब से बड़हन लाभ हवे, संतोख सबसे बड़का धन दुनियां में हवे, विस्वास सबसे बड़का मीत हवें, निर्वान सबसे लमहर सुख ह।

-धम्म पद-२०४

जिघच्छा परमा रोगा, संखारा परमा दुखा।
एतं ञत्वा यथा मूतं, निब्बाणां परमं सुखम्।।

अर्थात- भूख से बढ़ि के कवनो रोग नइखे, संस्कार सबसे बड़का दुख हवे, अइसन जनले पर निर्वाण सब से सुखकर बा। -धम्म पद २०३

विदाई गीत

-सविता सिंह

मोरे अँगना के सोन चिरइया,
चिरइया मोरी उड़ि रे चली।
अँखियन नीर ढुरै बहि जाला कजरा
हियरा न दुखवा समाय,
भैया जे रोवे निहारले डोलिया,
बाबा रोवैं मुहवाँ छुपाय,
गइया-बछरू त रोवैं मड़इया,
चिरइया मोरी उड़ि रे चली।
देख बेगाने चली हमरी गुड़इया,
अँगना भइल सुनसान,
दुखवा में डूबल धरती के मनवाँ,
टप-टप रौवे आसमान,
डोली लागे जस जल बीचे नइया,
चिरइया मोरी उड़ि रे चली।
गाछ-बिरिछ आजु देलें असिसिया,
नइहर छूटल आज,
देस पराये करम तोर बिटिया
सजना के संग तोर भाग,
अब के देखी रतियां जोन्हइया?
चिरइया मोरी उड़ि रे चली। ('पाती' से साभार)

भोजपुरी के अमर राष्ट्रीय गीत
"बटोहिया"

—अक्षयवर दीक्षित

भोजपुरी राष्ट्रीय गीत बटोहिया के अमर गायक स्व. रघुवीर नारायण का पूर्वज लोग के सारण जिला का नया गाँव में पैतृक निवास रहे। इहाँ के पितामह श्री मनियार सिंह जी छपरा नगर का दहिआवाँ मुहल्ला में आपन नया मकान बनवनी। एहीजा रघुवीर बाबू के पिता श्री जगदेव नारायण जी रहत रहनी। एही मकान में रघुवीर बाबू के जनम ३० अक्टूबर १८८४ ई. में भइल।

शिक्षा दीक्षा पवला का बाद रघुवीर बाबू कई जगह नौकरी कइनीं। कहीं स्थिर ना रहनीं। घूमत घामत छपरा अइनी आ जिला स्कूल में शिक्षकपद पर काम करे लगनीं। अस्थिर रहलो पर रघुवीर बाबू के कलम चलते रहे। कई गो काव्य रचना प्रकाशित हो गइल रहे।

छपरा निवास काल में १९११ ई. में बटोहिया जइसन अमर राष्ट्रीय गीत के रचना भइल। १९१२ ई. में एह गीत का पहिले–पहिल मंच मिलल। बिहारी स्टुडेन्ट कान्फ्रेन्स मोतिहारी में बाबू श्री कृष्णसिंह जी के अनुज बाबू गोपी कृष्ण जी का मधुर कण्ठ से जब एह गीत के स्वर लहरी निकलल त बूढ़–जवान सबके मुड़ी हिल गइल रहे। तबे से ई गीत राष्ट्रीय आन्दोलनकारी लोग के कण्ठहार बनि गइल। एह गीत रचना के पहिले हिन्दी में कवनो अइसन राष्ट्रगीत ना रहे जवन भारतीय राष्ट्र के महिमा उजागर करत होखे। बँगला में बंकिमचन्द्र चटर्जी के बन्दे मातरम् १८८२ ई. में, आ इकबाल के सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा १९०५ ई. में उर्दू में लिखाइल रहे। भारत के राष्ट्रगीत जन–गन–मन त १९१२ ई. में लिखाइल। बटोहिया गीत एतना प्रसिद्धि पवलस कि पटना युनिवर्सिटी 'गद्य–पद्य संग्रह' में आदर के साथे एकरा स्थान मिलल। ई गीत जन–मन में रचि बसि गइल। एकर तर्ज आम लोग का एतना रूचल जे एहि तर्ज पर फिरंगिया, वकीलवा, दरोगवा आदि अनेक गीतन के रचना भइल। एह गीतन में मनोरंजन बाबू के फिरंगिया छोड़ के अवरी कवनों जनता का जुबान पर ना चढ़ल। बटोहिया गीत बहुत ताकतवर बहुत कोमल, बहुत प्रभावोत्पादक, बहुत कारुणिक, बहुत मार्मिक आ सबसे बढ़ि के हृदय के छुए वाला बाटे। ई गीत सुनी आ पुंरा भारतवर्ष के दर्शन कर लीं। भारत के बाह्य आ आन्तरिक दूनूँ प्रकृति के दर्शन एइमें होला। गीत सुनत–सुनत सचहूँ लोर बहे लागेला। देश प्रेम से भरल एह गीत में का नइखे? तबे नूँ आज देश बिदेश में बटोहिया के गूँज बा। २६ अप्रैल १९९५ ई. के विश्वभोजपुरी सम्मेलन (देवरिया) में पद्मश्री श्री मती विन्ध्यवासिनी देवी आ डा. सरिता बुधू (मॉरिसस) का समवेत स्वर में जब ई गीत गुंजल त हजारन का संख्या में बटोराइल श्रोता झूमि गइले। एह गीत में राष्ट्रीयता भरल जवन जादू बा ऊ का अवरि कहीं होई?

प्रसिद्ध इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार जब ई गीत पढ़ले त एही ढ़ंग के खड़ी बोली हिन्दी में दोसर राष्ट्र गीत लिखे के प्रेरणा रघुवीर बाबू के देहले। ई प्रेरणा पाके ऊ 'भारत भवानी' गीत लिखबो कइले। प्रकाशित भइल, बाकिर बटोहिया के स्थान पर ना पहुँचा सकल।

बटोहिया पढ़ला का बाद राष्ट्र कवि दिनकर जी "बिहार की साहित्यिक प्रगति" में लिखनीं "स्व. रघुवीर नारायण के लिए क्या कहा जाए। बिहार में वे राष्ट्रीयता के आदिचारण और जागरण के अग्रदूत थे। पूर्वी भारत में राष्ट्रीयता की जो भावना मचल रही थी वह पहले इन्ही के बटोहिया

नामक गीत से फूटी और इस तरह फूटी की मात्र इस एक गीत ने उन्हे सफल राष्ट्रवादियों की पंक्ति में पहुंचा दिया।"

एकरा अलावे आचार्य शिवपूजन सहाय के संस्मरण, श्री नरेन्द्रनाथ साम के मधुर स्मृति, आचार्य नलिन बिलोचन शर्मा के अंग्रेजी आलेख रघुवीर बाबू के मूल्यांकन खातिर विशेष रूप से पठनीय बाटे। अइसन राष्ट्रवादी सुकवि के हमार शत् शत् नमन।

भोजपुरी भवन
निरालानगर, सीवान ८४१२२६

गीत

— श्री कृष्ण तिवारी

गते गते उगेला चनरमा हो रामा
पवन खींचे अँचरा।
दूर बहे नदिया, पियासलि अँखियां
हाफि—हाफि उड़े मन खोलि दूनो पंखियां
पलक—अंजुरि भरि मोतिया हो रामा
सपन देला पहरा।
नीबिया की गंछिया प पसरे चँदनिया
सुई अस चुभे अँग—अँग में किरिनिया
लिलरा प चमके बिजुरिया हो रामा
मथवा प बदरा।
झुरू—झुरू बहे अन्हुवाइलि बयरिया
चिंहुकि—चिंहुकि उठि बोले कोइलरिया
सून लगे अंगना—दुअरिया हो रामा
टूटि गइले असरा।

सी ६/१८२, हबीबपुर,
चेतगंज, वाराणसी

जेकरे हाथे में देबे के छमता बा ऊ सांस्कृतिक रूप से एतना गिरल बा कि कवि, चिंतक, लेखक के अपेछा कवनो टुच्चा राजनीतिक नेता के महत्व अधिक आंतक बा।

हरिशंकर पारसाई

सॉनेट

बरसात

—कविवर मोती बी.ए.

सरस बरसात के मौसम सुहावन आ गइल बाटे
जहां ले फेंड, पंछी, पसु सभे मस्ती में झूमेला
सरोवर, ताल पोखर नद-नदी बढिया गइल बाटे
उतरि असमान से भुंइयां बदरवा ठुमुकि चले ला

पंचइंया तीज, चउथि, अस्टमी, राखी सजल बहुरा
पितर गन स्वर्ग से आवेला आपन अंस पावेला
जिउतिया ब्रत, अनत, अतवार नइहर से लगल ससुरा
भवानी पूजि के लोगवा विजय दसमी मनावे ला

कहीं नेनुआ तुरा ताटे, कहीं मकई भुजा ताटे,
गवा तारे कहीं कजरी, कहीं झूला टंगाइल बा,
कहीं भईंस दुहा ताटी, कहीं दही महा ताटे
लगे चलचित्र अस सगरे, अजब कविता लिखाइल बा

प्रकृति चाहे जो ना घर में केहू के चुल्हि ना जरी
महल से झोंपड़ी ले जे बिना मारल सभे मरी

('भोजपुरी सॉनेट' से साभार)

अमर फल

संसार विष वृक्षस्य, द्वे फले अमृतोपमे !
काव्यामृत रसा स्वादः, संल्लापः सज्जनैः सह !!

ई संसार त बिख के फेंड ह, लेकिन एकर दूगो फल अमरित अइसन हवे। एगो ह काव्य के रसपान कइल आ दूसरका हवे सज्जन लोगिन के साथ बातचीत।

वराये पाकिये लफ्जे शबे-बरोज आनन्द !
कि मुर्ग माही बाशन्द खुफ्ता उबेगार !!

कवि अपने एगो सबद के चमकावे खातिन रात भर जागि के विहान क देला जबकि मुर्गा आ मछरी आराम के नींन से सूते ली।

जोग लिखी

!! श्री !!

प्रिय आशुतोष जी दि. ७.५.६८

'पुरूवैया' के अभिवृद्धि होखो इहै हमार कामना ह। आगे 'पुरूवैया' के खातिर कौनो लेख समय पाकर के लिखब।

सस्नेह

अपने का

(डा.) विद्या निवास मिश्र

एम– ३, बादशाह बाग, वाराणसी – २

भाई आशुतोष जी ५.१०.६७

राउर पठावल भोजपुरी डाइजेस्ट 'पुरूवैया' मिलल आ एके सुरूकिया रामदेव सुकुल के 'करइली साधू' पढ़ गइलीं। राउर साहँस के बलिहारी बा। एह समय में कवनो पत्रिका निकालल बड जोखिम के काम बा।

अभी एतने, बाकिर ढेर पूरा पढ़ले के बाद। 'पुरूवैया' में हमार सहयोग बराबर रही।

राउरे –मधुकर सिंह

धरहरा, आरा – ८०२३०१

१८.. १० .६७

परम आत्मीय आशुतोष जी, ॐ नमो नारायण। 'पुरूवैया' का विमोचन और लोकार्पण सम्पन्न हो गया, मैं प्रसन्न हूं। गोरखपुर और अन्य स्थल पर भी यह कार्य सम्पन्न हो तो 'पुरूवैया' की अपेक्षित लोकप्रियता प्राप्त होगी और आप का सुयश बढेगा। आप आचार्य वाणभट्ट की तरह झाड–झंखाड़ को काट कर अपना मार्ग बनाते आये हैं। यह आप के दुर्दमनीय व्यक्तित्व का समुज्वल पक्ष है। इसी जीवट के सहारे आप इस अभियान को काफी दूर तक ले जाने में सफल होंगे।

आपका–भुवनेश्वर प्रसाद सिन्हा

ए. डी. एम. (से. नि.)

पल्लवी होटल, हथुआ प्लेस

चेतगंज, वाराणसी – १०

प्रिय भाई दि. १५.१०.६७

'पुरूवैया' के प्रवेशांक देखि बहुत खुशी भइल। बहुत साफ–सुथरा स्तरीय पत्रिका बा। मन के बरबस अपनी ओर खींचि लेति बा। बधाई का संगे–संगे भविष्य खातिर हमार हार्दिक शुभकामना अंगीकार करीं।

अपने का–(डा.) विवेकी राय

विवेकी राय मार्ग

बडी बाग, गाजीपुर

३०. ६. ६७

आदरणीय पांडेय जी, प्रणाम। 'पुरूवैया' के प्रवेशांक मिलल। रउवां गिनल–चुनल आ स्तरीय, पठनीय आ चिंतनीय सामग्री देवे के प्रयास कइले बानी। राउर परिश्रम आ चिंतन दूनो सफल बा। प्रकासन में देरी खातिर रउवां खेद व्यक्त कइले बानी, बाकिर अइसन निमन अंक निकाल के प्रकाशन के विलम्ब वाला अंस के भुला दिहला के काम बा। हमनी के सुभ कामना आ बधाई स्वीकारीं। इहे प्रयास करीं कि दिनों दिन एकर पठनीय सामग्री उत्तम होखे आ अर्थ, श्रम आ सहयोग के अभाव में एकर भउवत ना होखे।

शुभेच्छु–(डा.) राजेश्वरी शांडिल्य

सम्पादक 'भोजपुरी लोक'

ए. १४, माल एवेन्यू कांलोनी, लखनऊ

मान्यवर दि. ३०.६.६७

'पुरूवैया' के प्रवेशांक मिलल, आभार। पत्रिका के छपाई–सफाई रूचिकर बा।

रचना नीक लगली स। कामना बा कि पत्रिका फूलत–फलत रहे।

'हमरा के मति पाहुन जानी, बूझीं – हम घरवैया!
इहे कामना प्रभु से बाटे, सदा बहे 'पुरूवैया'!!

राउरे–(डा.) बच्चन पाठक 'सलिल'
वीमेंस कॉलेज, टाटा – १

मानीय पांडेय जी, दि. १०.५.६८

सादर अभिवादन। 'पुरूवैया' त भोजपुरी पत्रिकन के बीच में एगो अइसन झकोर बनि के आइल बा जवना में हर रंग अवर हर महक के बानगी मिलि जात बा। एमे ग़ज़ल के रवानगी बा, गीत रसधार बा नवगीत के फुहार बा, लोकराग के सोन्ह महक बा, निबन्ध के झकोर बा, कहानी अवर संस्मरण के रसगर बादरन के बुन्नी से भींजल बयार बा। ई त 'पुरूवैया' ना होखे, मलय पर्वत के अंचरा से बहे वाली दखिनैया बयार हो गइल बा। जवन ठंढ़ (शीतल) होले, सुगंधि बहावत रहेले अवर मन्दगामी होले। इ पत्रिका त नवोढ़ा नायिका के अवगुंठन (घुंघट) बा जवना के खोले बदे उल्लास, जिज्ञासा अवर रोमांच के अनुभव होला।

अइसन नीमन अवर रस छ्लकावत पत्रिका निकारे बदे हमार बधाई स्वीकार करीं।

नेही छोही–(डा.) आद्या प्रसाद द्विवेदी
अध्यक्ष, सतीशचन्द्र स्नातकोत्तर कॉलेज
बलिया

दि. २३.१२.६७

आदरणीय पांडेय जी, नमस्कार

भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका में 'भोजपुरी के लोक प्रिय कवि पांडेय आशुतोष' पढ़ कर काफी अच्छा लगा। पत्रिका के द्वारा ही 'पुरूवैया' डाइजेस्ट भोजपुरी पत्रिका का सम्पादन आप के कुशल नेतृत्व में हो रहा है, यह जानकर बेहद खुशी हुई। इसी बीच बाराहाट जाने पर राधा (डा. राधा सिंह) के टेबुल पर 'पुरूवैया' डाइजेस्ट अंक देखा। आप के समान ही सम्मोहक व्यक्तित्व का सम्पादकत्व देख कर मन बाग–बाग हो उठा। ऐसा लगा कि एक क्षण हम आप से रूबरू हो रहे हों।

आप की–(डा.) कृष्णा सिंह
राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय
नाथ नगर, भागलपुर

२७.१०.६७

प्रिय भाई आशुतोष जी,

सादर बन्दे। जमशेदपुर के पता पर भेजल भोजपुरी डाइजेस्ट 'पुरूवैया' के प्रवेशांक हमरा एहिजा बहुत दिन के बाद मिलल हा। हम अब स्थाई रूप से गांव पर रहत बानी। 'पुरूवैया' के मुखपृष्ठ के रूप आ साज सज्जा देखि के बेहद खुशी भइल। ऑफसेट के छपाई से अन्दर के सामग्री बडा साफ–सुथरा लउकत बाडी स। सामग्रियो सभ अपने आप में बेहतर बाडी स।

सम्पादकीय तर्पण के रूप में बन्धुवर आदरणीय स्व. हरिशंकर उपाध्याय के बिचारन के छापि के बढ़िया आ नया काम कइले बानी। कुशल सम्पादन खातिर हमार लाखन बधाई आ आशीष स्वीकारीं।

भवदीय
(डा.) रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
ग्राम + डाक– निमेज, बक्सर

२८.६.६७

माननीय पांडेय जी, यथाजोग नमस्कार।

'पुरूवैया' पवनी। दुनियां जवन रास्ता में जाई ओही राहे जे समझदार लोग रउरी तरह होई ऊ ना न जाई। बयार के राह जेने जाला ओनिये सब जाला, बाकी

कुछ लोग अइसन बाडे जे बयार के रहिये बदल देले। समरथी जन सब कुछ करि सकेले। दुनियां अपने सुख ऐश्वैर्य, सौभाग्य खातिर धन कमाये में लागल बा बाकि ओही में त रउरा अपना के स्थापित करे में लागल बानी। धन ना आजु ले लेके केहू गइल बा, आ ना लेके जाई।

राउरे– सत्यदेव पांडेय

'ज्योति निकेतन'

सेवा पुरी, भीखमपुर रोड, देवरिया

दि. ३.११.६७

सम्माननीय पांडेय जी, प्रणाम।

'पुरूवैया' का प्रवेशांक मिला। अनेक धन्यवाद। मैंने भी तथा अन्य जिसने देखा, सभी ने सराहना की। 'पुरूवैया' हवा में जितनी मादकता है, उतनी ही इस पत्रिका में है। सम्पादन, विषयों का चयन, गेटअप, आकार–प्रकार छपाई सभी सुन्दर बन पडे हैं। श्री धरीक्षण मिश्र की कविता में गांव की नारी की व्यथा का अच्छा चित्रण हुआ है। विवेकी राय का लेख, रामदेव शुक्ल की कहानी, 'करइली साधू,' बडे अच्छे लगे।

आपका शुभेच्छु

(प्रो.) सदानन्द दुबे 'ईशान'

सम्पादक– 'यूग वातायन'

१६/१४४ राघवनगर, देवरिया

महाशय,

दि. ७.६.६७

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'पुरूवैया' भोजपुरी भाषा के साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाएगी। इस स्वर्ण जयंती के राष्ट्रीय पर्व पर इस पत्रिका का 'लोकार्पण' विशेष महत्व रखता है। इससे समाज के हर वर्ग के प्रवुद्ध पाठक लाभान्वित होंगे। पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

शुभेच्छु– अरूण कुमार सिंह

एडिसनल जिला एवं सत्र न्यायाधीश

बेतिया, प. चम्पारण

१३ – ४ – ६८

श्रद्धेय भाई साहब, सादर प्रणाम।

सितम्बर में 'पुरूवैया' के प्रवेशांक भेज के रउरा हमरा पर बडहन कृपा कइले रहनीं। बहुत सुग्घर आ वैज्ञानिक ढ़ंग से सरिहारल रचना रहली स, लेकिन जब मिलल त हम जीवन मृत्यु से जूझत रहनीं। संजोग जीये के रहल जे चल रहल बानी। हम समझत बानी कि अउरो अंक निकलल होई ऊ हमके मिले के चाहीं।

राउर– आनन्द संधिदूत

द्वारा – इलाहाबाद बैंक, मिर्जापुर

प्रियवर पांडेय जी; दि. १०.२.६८

सप्रेम नमस्कार

६.११.६७ के आपक 'पुरूवैया' (प्रवेशांक) मिललि। आप ई बहुत बडा काम उठा लिहलीं। भगवान आप के सफलता दें। हम स्व. गणेश चौबे जी के सुर में सुर मिला के ए पत्रिका के दीर्घ जीवन क कामना करत हई।

पहिला पन्ना पर चौबे जी क आसिरबाद आ आखिरी पर डा. परमेश्वरी लाल गुप्त क 'पाती मिलल' वाली नसीहत से सहमत हई। अब भोजपुरी में खूब काम होखे। एम्मे खूब लिखाय। तरह तरह क कोश बने। एकरी खातिर हिन्दी के नीचा देखवले के जरूरत नइखे।

शुभकामना सहित– जगन्नाथ त्रिपाठी

(से. नि. वनाधिकारी)

५५, पन्तनगर, गोंडा (उ.प्र.)

प्रिय भाई दि. २५.७.६८

भोजपुरी में डाइजेस्ट निकाले के विचार समीचीन बा। भोजपुरी में एतना साहित्य आ गइल बा आ धड़ल्ला से आ रहल बा कि अब डाइजेस्ट के जरूरत भोजपुरी के पाठक खातिर हो गइल बा। रउआ एह जरूरत के महसूस कइलीं आ एकरा दिसाईं काम शुरू कइलीं, एकरा खातिर आत्मिक साधुवाद।

राउर– पाण्डेय कपिल, पटना–४

इंडियन इंस्टीच्यूट
आर्फ रिसर्च इन न्योमिसमेटिक स्टडिज
अंजानेरी, नासिक–४२२२१३
महाराष्ट्र, इंडिया २.११.६७

प्रिय पांडेय जी,

नमस्कार। महिना भर से उपरे भइल होई जब राउर क भेजल 'पुरवैया' क अंक मिलल रहल। पाती ना लिखि पउंली, एकरे खातिन छिमा करब।

पतरिका बढ़िया सजधज के निकलले खातिन राउर अउर राउर साथिन लोगन सब के बधाई। भोजपुरी के बढन्ती के खातिन अइसन पतरिका जरूरी रहल बाकि खाली पतरिका निकलले से ही ई काम नाहीं होई। होखे के ई चाही जे भोजपुरी के बोली के दरजा से उप्पर उठा के भाखा बनावै के जोगाड़ करे के चाहीं।

भोजपुरी में संस्किरित सब्दन अउर हिन्दी के सब्दन के भोजपुरी रूप देहल जाय। मिसाल खातिन अंगरेजी कै 'लैन्टर्न' हिन्दी में 'लालटेन' हो गयल। केहू 'लैन्टर्न' ना कहेला। वोही तरह हिन्दी संस्किरित सब्दन के भी भोजपुरी बनावल जा सकैला।

गनेस चौबे जी कै चिट्ठी लेई। ओम्मन केतना सबद अइसन हवे जेके जगह ऊ भोजपुरी सबद लिख सकत रहलैं। 'अपार' की जगह 'बड' लिख सकत रहलैं। अन्त, लोकार्पण, अनेक, पत्र–पत्रिका, समय समय, प्रकाशित, अभाव, प्रयास साहित्य प्रेमी, सहयोगी, उदार, योगदान, भयंकर, साहित्य जगत, दृढ संकल्प, आत्म–विश्वास, सुदीर्घ जीवन, अशीर्वचन ई सब के जगह ऊ सहजै भोजपुरी सब्द खोज– ढूंढ़ सकत रहलें। अउर न तो इन सब कै भोजपुरी के सांचा में ढ़ार सकल जात रहल। ई बात करीब करीब सभै लेखक के बारे में कहल जा सकैला। अगर लेखक लोग अइसन सब्द लिखै लँ त राउरा सम्पादक होके नाते भोजपुरी में ढ़ार के तब छापीं त लोगन के आंख खुली। भोजपुरी का आपन सब्दन क खाजाना बड हवे। ओके खोल के, निहार के देखै के चाहीं। चउबे जी एगो कोस बनउले बाटें। ऊ ओन के बस्ता में रखल कउने काम आई? ओन से लेके ओके छपावै कै जोगाड़ करीं। हमरी नाई ऊं बूढ़ भईलैं। एके समझीं। दूसर बात, ऊ भोजपुरी क बड़ मसाला जुटै लै हवें। ओके लेके उघारे कै चाही। रउरा पतरिका के 'डाइजेस्ट' नाम देहले हईं। ना जानी एकर माने जानी ला या दूसरे कै देखा देखी नांव धइलीं। 'डाइजेस्ट' अइसन पतरिका के कहैलँ जैम्मे दूसरी जगह के नई–पुरान लेखन के छोट कै के छापल जाले। वइसही ई पतरिका में जउन बिना छपल गांव–गवई में लोगन के गाल में छिपल ह त ओके निकाल के उजागर करे के चाहीं। चउबे जी जउन कुछ जुटवले हवें, ओके देखीं। ओम्मे बड मसाला मिली। जवन दूसरे भाखा के साहित्त से कउनों माने में कम न होखीं। 'बिसराम के विरहन' के देखीं। ऊ एक बड़ नमूना बा। 'रेलिया सौतिनिया बनि के पिया के उड़लि जाय' ई गीत में केतना बेजोड़ उपमा बाय। कल्पना कै केतना ऊंच उड़ान हवै। ई मेहरारून के गीत में अइसन बहुत ऊंच चीजु मिली, जउन गजल अउर गीत में न हवै।

राउत पतरिका से मालूम पड़ल कि कउनो 'बाबू कुंवर सिंह विश्व विद्यालय बाय। ई नाम हम पहली बार सुनत हईं। बताईं। इ हो जनली कि भोजपुरी एम. एम. में रखल गइल। पर ई बताईं कि इम्मन का पढ़ावल जात हवे। केतना लोग एकरे किलास में हवें। ई सब अच्छी बात हव, पर वइसन जईसन जड़ न पकड़ के सोझे पुनुई पकड़ लै कै कोसिस करै। जड़ मजबूतै न भइल, पुनुई तक पहुंचब कइसे। पाती बड़ हो गइल। सोचीं समझीं।

राउर–

(डा.) परमेश्वरी लाल गुप्त

गरीबी में डूबल आ जीवन से उबल लोगन के सेवा खातिन हमार सस्ता आ सहज उपचार

होमियो सेवा अस्पताल

श्री नगर, (बगहा–२)
प. चम्पारन

निदेशक
अरुण कुमार सिंह
कोड– ०६२५१ फोन– २६४५५
बगहा, प. चम्पारन

नोटः- महीना के हर १ से ७ तारीख तक सुयोग्य चिकित्सक से मुफ्त परामर्श लीं।

मरीज रहे खातिन छौ पलंग के इंतजाम बा

'पुरूवैया'

देस के पहिलका भोजपुरी डाइजेस्ट
के
दोसरका अंक

प्रकासन पर हमार
अनन्त शुभकामना
बटोरीं सभे।

सुभेच्छु -

आनन्द कुमार 'ज्योति'
प्रबंधक

सहारा इंडिया
बगहा (प. चम्पारण)
कोड- ०६२५१ फोन- २७२१७

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM

H.M.P. SUGARS LTD.

P.O. : NARAIPUR - 845105

DIST. WEST CHAMPARAN

(BIHAR)

REGD. OFFICE

' FAIRLIE HOUSE'

4, FAIRLIE PLACE,

CALCUTTA - 700 001

☎ : (033)220/9965/66

FACTORY

Rly. Stn : BAGAHA (N.E. RLY.)

P.O. NARAIPUR - 845105

DIST. WEST CHAMPARAN (BIHAR)

☎ : (06251) 26320, 26271
26450, 26249

MANUFACTURE
OF
BEST WHITE CRYSTAL SUGAR.

- किसान हमार भगवान
- सही समय पर दाम
- खेती ला सहयोगी रिन
- बढ़िया गन्ना उपज पर इनाम
- सामाजिक सेवा में तत्पर

ई हमार सहज, सुलभ सेवा बा

एस० एन० पोद्दार
प्रधान व्यवस्थापक

हरिनगर सुगर मिल्स लिमिटेड
हरिनगर
प० चम्पारन, बिहार

मुद्रक— भारद्वाज मुद्रणालय,
पो० मलकौली—८४५१०५
बगहा—२, प० चम्पारण

©:—२६५६७

पुरुवैया :— सोलह रूपये पचास पैसे